ऋषि प्रसाद

वर्ष : ३

मई-जुन १९९३

अंक : १८

'तेरी मरजी पूरन हो...'

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज

सुरत के आश्रम में नवनिर्मित सत्संग भवन में पूज्य श्री गुरुवर के श्रीमुख से नवीन आध्यात्मिक रहस्य प्राप्त करते हुए गुरु के लाडले...

गुरुजी के संग में और होली के रंग में... होली हुई तब जानिये पिचकारी सद्गुरु की लगे... सुरत के आश्रम में होली शिविर में धुलेन्डी की रंगवर्षा...

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

वर्ष : ३
अंक : १८
मई-जुन १९९३

शुल्क वार्षिक : रू. २५/-
आजीवन : रू. २५०/-
परदेश में वार्षिक : US$ १५ (डॉलर)
आजीवन : US$ २०० (डॉलर)

कार्यालय :
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५.
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

परदेश में शुल्क भरने का पता :
International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N. J. 07656 U.S.A.
Phone (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : एच. परीख
प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,
अहमदाबाद–३८० ००५ ने
अंकुर ऑफसेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया ।

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ।।

प्रत्येक पर्वत पर मणियाँ नहीं प्राप्त होती, प्रत्येक हाथी के पास से मोती नहीं मिलते, प्रत्येक वन में चंदन के वृक्ष नहीं होते, वेसे ही संतपुरुष भी सर्वत्र नहीं मिलते। किसी–किसी जगह पर कभी–कभी साधु पुरुषों के दर्शन और सत्संग मिलते हैं । मनुष्य जाति का यह परम सौभाग्य है कि परमात्मा, आदि पुरुष नारायण का नित्य और नैमित्तिक अवतार यदा–कदा होता रहता है ।

जीवात्मा को परमात्मा से जोड़नेवाली जंजीर की प्रथम कड़ी है संत–सान्निध्य । हमारे देश में और संस्कृति के इतिहास में परमात्मा के अवतारों की पूजा, आराधना और प्रागट्य महोत्सव को मनाने की एक विशिष्ट प्रणालि प्रयुक्त है । परमात्मा के नैमित्तिक अवतारों भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, नृसिंह, वामन, झुलेलाल वगैरह के साथ–साथ नित्य अवतार श्रीमद् आद्य शंकराचार्य, गुरुनानक, संत कबीर, एकनाथ, तुकाराम, ज्ञानेश्वर, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी रामतीर्थ, संत कंवरराम, संत टेऊंराम, पूज्य श्री लीलाशाह बापू और गुरुदेव श्री आसारामजी बापू के प्रागट्य महोत्सव.... ये सब हमारी भारतीय संस्कृति के आधारस्तंभ हैं । उनका उत्सव हमारी धार्मिकता को टिकाये रखता है, अस्मिता को बनाये रखता है और जनजीवन में उत्साह, प्रेरणा, हिम्मत और इष्टनिष्ठा को बढ़ाता है ।

मार्च और अप्रैल ये दो महीने खूब धूमधाम, उत्साह और उत्सव मनाने के महीने थे। मार्च के प्रथम सप्ताह में सुरत में होली के शिविर का आयोजन हुआ । होली के रंग में रंगकर मतवाले हुए हरि–गुरुभक्तों की छबि को देखोगे तो खयाल आयेगा कि गुरुज्ञान, प्रेम और आनंद के कैसे रस को उन्होंने प्रत्यक्ष चखा ।

होली हुई तब जानिये, पिचकारी सद्‌गुरु की लगे ।

यह तो जिसने पाया उसीने जाना, अनुभव किया और वही वर्णन कर सकता है । कलम और कैमेरे की हैसियत कितनी ?

सुरत के बाद उल्हासनगर में सत्संग समारोह और फिर भावनगर में सत्संग वर्षा । इसमें २० तारीख को पूज्यश्री ने 'भारत जागो' की गगनभेदी विद्युन्मयी अपील के साथ लाखों सोये हुए हृदयों को जगा दिया, धर्मनिष्ठा में जाग्रत कर दिया । देश में खलबली मचा दे ऐसी 'भारत जागृति' ऑडियो एवं विडियो कैसेट तो सबको सुननी और सुनानी चाहिए । भावनगर के बाद चेटीचंड उत्सव अहमदाबाद में और पूज्यश्री का प्रागट्य महोत्सव रतलाम–पंचेड़ के आश्रम में ।

इन उत्सवों के माध्यम से ही हम गुरुज्ञान का चस्का ले सकते हैं और लिवा सकते हैं ।

अपने 'ऋषि प्रसाद' का वर्ष इस अंक के साथ पूरा होता है । नया वर्ष जुलाई गुरुपूर्णिमा से शुरु होगा । चालू वर्ष में 'ऋषि प्रसाद' के जिन सदस्यों, एजन्टों एवं सेवाधारियों ने घर–घर में 'ऋषि प्रसाद' पहुँचाने की व्यवस्था की है, खुद कष्ट सहन कर सबके यहाँ गुरुप्रसादी पहुँचाने की सेवा की है, ऐसे सब प्रेमी, निष्ठावान, सेवाभावी साधकबंधुओं का हम आभार मानते हैं ।

'ऋषि प्रसाद' के जिन सदस्यों को किसी न किसी कारणवश 'ऋषि प्रसाद' के अंक समय पर न मिलते हों उनसे नम्र प्रार्थना करते हैं कि हमें एक पोस्टकार्ड द्वारा अवश्य सूचना देने का कष्ट करें । 'ऋषि प्रसाद' की प्रकाशन तारीख ९ है । उसके बाद यदि बीस दिन तक आपको अंक न मिले तो अवश्य निश्चित रूप से कार्यालय को सूचित करें, जिससे हम आपकी सेवा में अधिक से अधिक सक्षम बन सकें । इस भगवद् कार्य में, गुरुकार्य में हम आप सबके सहयोग से ही आगे कदम रख रहे हैं । अतः आपकी सूचनाएँ हमें सहर्ष स्वीकार्य हैं ।

– श्री योग वेदान्त सेवा समिति

परमहंसों की प्रसादी

लोग संसार में पूरा जीवन मजदूरी कर करके मर जाते हैं फिर भी पूरी तृप्ति नहीं पाते, सच्चा सुख, सच्चा विश्राम नहीं पाते । अगर ईश्वर के लिए या तो आत्मज्ञान के लिए प्यास जग जाय, तड़प जग जाय तो जो कुछ मिलेगा उसके आगे तमाम सांसारिक उपलब्धियाँ छोटी हो जायेंगी ।

आप अन्य लोगों से जैसा व्यवहार करते हैं वैसा ही घूम-फिरकर आपके पास आता है । इसलिए दूसरों से भलाई का व्यवहार करो । वह भलाई कई गुनी होकर वापस लौटेगी ।

हम लोग मुसाफिर हैं इस संसार में । यहाँ सदा रहने के लिए तो कोई आया नहीं । सदा कौन रहेगा ? समय आने पर सबको जाना है । कभी न कभी संसार को छोड़ना है । कोई मरकर छोड़े कोई समझकर छोड़े । मरकर छोड़ने से आदमी बार-बार मरता ही रहता है । समझकर छोड़ने से आदमी 'स्व' में जाग जाता है । उसको फिर मरना नही पड़ता ।

बन्दर पकड़नेवाले लोग क्या करते हैं ? छोटे मुँहवाले बर्तन को, घड़े को जमीन में गाड़ देते हैं । मूँगफली, चोकलेट, अखरोट आदि चीजें बन्दरों को दिखाकर उस घड़े में डाल देते हैं । फिर दूर जाकर छिप जाते हैं । बन्दर आते हैं । घड़े में हाथ डालकर मुट्ठी भर लेते हैं लेकिन बंधी हुई मुट्ठी छोटे मुँह से बाहर नहीं निकल पाती । बन्दर समझते हैं कि हमको किसीने पकड़ रखा है । मदारी आता है, बन्दर के गले में रस्सी डाल देता है । फिर बन्दर के हाथ पर डंडा मारकर मुट्ठी खुलवाता है । बन्दर की मुट्ठी तो खुलती है किन्तु सदा के लिए बन्धन में बंध जाने के बाद । गले में फाँसा पड़ने से पहले बन्दर अगर छूटना चाहे तो सिर्फ मुट्ठी खोल दे, चीजों को घड़े में ही छोड़ दे तो स्वतंत्र हो जाय । वह मुट्ठी खोलता नहीं, सिर्फ छटपटाता है छूटने के लिए । अपने आप छूट जाए तो स्वतंत्र है । जब डंडा मारकर छुड़वाया जाय तो परतंत्र हो जायेगा ।

ऐसे ही संसार की चीजों को, संसार के सम्बन्धों को, संसार की आसक्ति को, संसार के चिन्तन को हम लोगों ने पकड़ रखा है । मृत्यु रूपी मदारी आकर डंडा मारेगा तो सब छूट जायगा । छूट तो जायगा, साथ ही मौत का फाँसा लग जायगा । फिर न जाने किस गर्भ में जाना पड़ेगा ।

'पर' की आसक्ति को पकड़ रखेंगे तो आसक्ति के पदार्थ सदा नहीं रहेंगे । 'पर' सदा नहीं रहता और 'पर' में आसक्त होते हैं तो 'स्व' की स्वतंत्रता खो बैठते हैं । 'स्व' वह है जिसको आप छोड़ नहीं सकते ।

संसार में पति मिलेगा वह भी चल बसेगा एक दिन, पत्नी मिलेगी वह भी विदा होगी एक दिन । लेकिन एक बार 'स्व' की मुलाकात हो गई, ठीक से पहचान हो गई तो बेड़ा पार हो गया । आप अमर हो जाओगे ।

मैं ऐसे वर को क्यों वरूँ जो उपजे और मर जाय ।
मैं तो वरूँ मेरे गिरधर गोपाल को ।
मेरो चूड़लो अमर हो जाय ॥

केवल मन्दिर या आश्रम में ही नहीं, जहाँ-जहाँ समय मिले, अनुकूलता मिले, चुप हो जाओ । भीतर जो 'पर-चिन्तन' हो रहा है उसको देखो । 'पर-चिन्तन' कौन कर रहा है ? मन । 'पर-चिन्तन' से आखिर क्या मिलेगा ? फालतू बातें, संसार के नश्वर पदार्थ । आखिर इनसे क्या ? पराधीनता । अतः 'स्व' में आ जाओ ।

'स्व' में आने के लिए

आप अन्य लोगों से जैसा व्यवहार करते हैं वैसा ही घूम-फिरकर आपके पास आता है । इसलिए दूसरों से भलाई का व्यवहार करो । वह भलाई कई गुनी होकर वापस लौटेगी ।

हम जो चाहते हैं वह सब होता नहीं । जो होता है वह सब भाता नहीं । जो भाता है वह सदा टिकता नहीं । तो फिर क्यों 'पर' का चिन्तन करें ?

तड़प होनी चाहिए । 'पर–चिन्तन' में 'स्व' का खजाना ही खो जाता है । क्या साँस लेने का चिन्तन करते हो ? शरीर में रक्त दौड़ाने का चिन्तन करते हो? बाल उगाने का चिन्तन करते हो ? नहीं । सब अपने आप सहज स्वाभाविक हो रहा है ।

हम जो चाहते हैं वह सब होता नहीं । जो होता है वह सब भाता नहीं । जो भाता है वह सदा टिकता नहीं । तो फिर क्यों 'पर' का चिन्तन करें ?

मेरो चिन्त्यो होत नहीं हरि को चिन्त्यो होय ।
हरि को चिन्त्यो हरि करे मैं रहूँ निश्चिन्त ।।

निश्चिन्त हो जाओ । फिर जो होगा, सब बढ़िया होगा । 'पर' का चिन्तन करने से 'स्व' की शक्ति क्षीण होती है । 'पर' का चिन्तन हटाने के लिए 'स्व' का चिन्तन करना चाहिए । 'पर' का चिन्तन हट गया तो फिर 'स्व' का चिन्तन करना नहीं पड़ता । 'स्व' का स्वरूप प्रकट हो जाता है । 'स्व' में प्रीति स्वाभाविक होने लगती है । सर्वत्र 'स्व' का स्वराज्य मालूम होने लगता है । 'स्व' की सत्ता सर्वत्र है ।

अपने सारे शरीर में 'स्व' की सत्ता है । शरीर अपने आपको दुःख नहीं देगा । क्योंकि शरीर के सारे अंग 'पर' नहीं रहे, 'स्व' हो गये । ऐसे ही हमें अपने आपका पता चला तो ज्ञान हो जायगा कि, 'सारा विश्व केवल 'स्व' का ही विवर्त मात्र है, एक ही चैतन्य सत्ता का विलास मात्र है । विश्व के मूल में एक ही 'स्व' है और वह 'स्व' मैं हूँ । मैं ही यह विश्व होकर दिख रहा हूँ । 'ऐसा बोध जिसको हो जाता है, विश्व उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता । बिगड़ता है 'पर' का । 'स्व' का कुछ नहीं बिगड़ता । 'स्व' में कुछ बिगड़ने सुधरने जैसा नहीं है । कितना भी घाटा पड़े, आपका कुछ घाटा नहीं पड़ सकता । कितना भी मुनाफा हो, आपका मुनाफा नहीं, आप ऐसे हो ।

आप इतने महान हो कि संसार भर की वस्तुएँ आपको दी जायँ तो भी आपमें कुछ बढ़ता नहीं । आपसे सबकुछ छीन लिया जाय, आपका शरीर भी छीन लिया जाय तब भी आपका कुछ घाटा नहीं, आप ऐसे हो ।

पर हाय .... ! 'पर' के चिन्तन में खो गये । अपने पास चीजें बढ़ती हैं तो अपने को बड़ा मानते हो । चीजें चली जाती हैं तो अपने को छोटा मानते हो ।

रूपये बढ़ने से अगर आप बड़े हो गये तो बड़प्पन आपका नहीं, रूपयों का बड़प्पन हुआ । बड़ी कुर्सी आने से बड़े हो गये तो आप बड़े नहीं, कुर्सी का बड़प्पन हुआ ।

हमने अपने आपका बड़प्पन जाना नहीं इसलिए धन के, कुर्सी के, चमड़ी के सौन्दर्य के बड़प्पन को अपना बड़प्पन मान लेते हैं । 'स्व' को लाचार बना दिया 'पर' का प्रभाव बढ़ाकर ।

'मैंने बहुत दुःख देखे ....।' दुःख देखे न ? तो देखनेवाला दुःख से अलग हुआ कि नहीं ? जो दिखता है वह आप नहीं हो । जो देखता है वह आप हो ।

आपने सुख–दुःख देखे, आपने गरीबी–अमीरी देखी, आपने मान–अपमान देखा, आपने बड़प्पन–छोटापन देखा । अरे आप मौत को भी कई बार देखकर आये हो मगर याद नहीं ।

ज्ञान दो प्रकार के होते हैं : इन्द्रियगत ज्ञान और बुद्धिगत ज्ञान । इन्द्रियगत ज्ञान इन्द्रियों से होता है । बुद्धिगत ज्ञान बुद्धि से विचारने पर होता है ।

बुद्धि लगाकर युक्तिपूर्वक विचार करोगे तो पता चलेगा कि आपने कई बार अपने शरीर की मौत देखी है ।

'पर' का चिन्तन करने से 'स्व' की शक्ति क्षीण होती है । 'पर' का चिन्तन हटाने के लिए 'स्व' का चिन्तन करना चाहिए ।

भ्रांति भी दो प्रकार की होती हैं : इन्द्रियगत भ्रांति और बुद्धिगत भ्रांति । इन्द्रियगत भ्रांति

भ्रांति दो प्रकार की होती हैं : इन्द्रियगत भ्रांति और बुद्धिगत भ्रांति । इन्द्रियगत भ्रांति बाह्य प्रकाश से, बाह्य ज्ञान से चली जाती है । बुद्धिगत भ्रांति ब्रह्मज्ञान से निवृत्त होती है ।

बाह्य प्रकाश से, बाह्य ज्ञान से चली जाती है । बुद्धिगत भ्रांति ब्रह्मज्ञान से निवृत्त होती है । जो ब्रह्मज्ञान में ठहर जाते हैं उनकी बुद्धिगत भ्रांति चली जाती है ।

'पर' के चिन्तन से बचें तो 'स्व' में प्रीति होने लगती है । 'पर' वस्तु के आकर्षण से बचें तो 'स्व' का आकर्षण समझ में आ जाएगा ।

'पर' को इतना महत्त्व न दो कि वह 'स्व' को जंजीरों में डाल दे ।

'पर' के चिन्तन से छूटने के लिए 'स्व' का चिन्तन किस प्रकार करें ? 'मैं साक्षी हूँ ... दृष्टा हूँ ... सबको देखनेवाला, सबको सत्ता देनेवाला निर्मल चिदाकाश हूँ... आनन्दस्वरूप, नित्य मुक्त आत्मा हूँ ....' इस प्रकार 'स्व' का चिन्तन करने से 'पर-चिन्तन' छूटने लगेगा । आप बिखरने से बच सकोगे ।

जिसको 'स्व' का ज्ञान हो जाता है वह आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी हो जाता है ।

ब्रह्मज्ञानी के दर्शन बड़भागी पावै ।
ब्रह्मज्ञानी को बल-बल जावै ।
ब्रह्मज्ञानी की मत कौन बखाने ?
नानक ! ब्रह्मज्ञानी की गत ब्रह्मज्ञानी जाने ।।

ब्रह्मज्ञानी की मति 'स्व' में ठहर जाती है ।

साचा संतोने वंदन प्रेमथी रे ... ।
इ तो जगमां चालता छे भगवान ।।
साचा संतोने...

सत्संग हमें यह बताता है कि व्यर्थ चिन्तन से बचो । व्यर्थ चिन्तन से व्यर्थ प्रवृत्ति होती है । व्यर्थ प्रवृत्ति व्यर्थ जीवन की ओर ले जाती है । व्यर्थ चिन्तन से बचे तो 'स्व' का रस आने लगेगा । 'स्व' का रस आ गया तो आदमी निहाल हो गया । स्वरस का अर्थ है निर्विषय सुख । शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध – ये पाँच प्रकार के विषय हैं संसार के । इन विषयों से रहित जो सुख है वह है 'स्व' का सुख ।

ऐसा सुख जिन महापुरुषों को मिल गया उनके सान्निध्य मात्र से संसारियों के पाप कटने लगते हैं, बेचैनी हटने लगती है। ये महापुरुष भी तो सत्संग से बने हैं । ऐसा कोई महापुरुष नहीं मिलेगा जिसके जीवन में सत्संग न हो । सत्संग के बिना कोई महापुरुष बन जाय यह संभव नहीं ।

सत्संग व्यर्थ चिन्तन से बचाकर 'स्व' की तरफ ले आता है । जिसके जीवन में सत्संग नहीं है उसका व्यर्थ चिन्तन बढ़ जाता है । वह 'स्व' से हटकर 'पर' में अधिक रम जाता है । आदमी जितना 'पर' में जाता है उतना पराधीन हो जाता है । पराधीन को सुख कहाँ ?

सत्संग छोड़कर 'पर-चिन्तन' में गये तो शुरु-शुरु में हर्ष मिलेगा, थोड़ा सुख महसूस होने लगेगा किन्तु पुण्य खर्च हो जायगा, खत्म हो जायगा फिर 'पर' में परेशानी ही परेशानी मिलेगी । सत्संग परेशानी से बचाकर 'स्व' में ले आता है । सत्संग को छोड़ा, 'स्व' का अनुसन्धान छूटा तो फिर परेशानी चालू ।

पतन होते समय पता नहीं चलता कि पतन हो रहा है । उस वक्त मजा आता है। जैसे, बच्चा फिसलपट्टी से फिसलता है तो मजा आता है पर वास्तव में जो सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा था उसका मजा है, फिसलने का नहीं । चढ़ पाया था तभी फिसलने का मजा आया । पूरा फिसल गया, मजा खत्म ।

महापुरुष भी तो सत्संग से बने हैं । ऐसा कोई महापुरुष नहीं मिलेगा जिसके जीवन में सत्संग न हो । सत्संग के बिना कोई महापुरुष बन जाय यह संभव नहीं ।

रात्रियों में प्रगाढ़ निद्रा में, मौन अवस्था में, दस-पन्द्रह दिन के संयम से शरीर में जो शक्ति का संचय हुआ, Energy Create हुई उसके पतन

का सुख मैथुन में महसूस होता है । वास्तव में वह सुख पतन का नहीं है, संयम का सुख है । अगर पतन का सुख होता तो पतितावस्था में वह बना रहता । वह टिकता नहीं । पतन के बाद विषाद और ग्लानि आ जाती है । काम–सुख स्व–सुख नहीं है, पर–सुख है ।

परिश्रम करके पढ़े–लिखे, परिश्रम करके धन कमाया, धन खर्च करके चीजें ली तो चीजों का सुख नहीं है । आपके परिश्रम का जो संचय था उस संचय के ह्रास का सुख है, सुखाभास है । पूरा जीवन इस प्रकार संचय और ह्रास के चक्कर में पूरा हो जाता है । अपने आपका, जो सदा साथ है उस 'स्व' का बोध नहीं होता । इस बोध से वंचित रहकर संसार की मजदूरी में लगे रहेनेवाले लोगों को संतपुरुष पशु कह दें तो पशु भी नाराज हो जाते हैं । पशु कहते हैं कि : हम तो अपना कर्म काटकर मनुष्यता की तरफ ऊँचे जा रहे हैं और ये मनुष्य ऊँचाई छोड़कर नीचे आ रहे हैं ।

सत्संग के बराबर दुनियाँ में और किसी चीज का मूल्य नहीं है। रिद्धि–सिद्धियाँ जिनके चरणों में बैठी रहती हैं, राजा–महाराजा जिनके दास बनकर बैठे रहते हैं ऐसे आकाशचारी योगी भी श्रीवशिष्ठजी महाराज के सत्संग में गुप्त रूप से आकर बैठ जाते थे । सत्संग ऐसी चीज है ।

❀

जिसके घर से अतिथि को निराश होकर लौटना पड़ता है, उसके पितर पंद्रह वर्ष तक भोजन नहीं करते हैं । यदि देशकाल के अनुसार भोजन की इच्छा से चाण्डाल भी अतिथि के रूप में आ जाय तो उसका सत्कार करना चाहिए । जो अतिथि का सत्कार नहीं करता है, उसका उनी वस्त्र ओढना, स्वयं अपने लिए रसोई बनाकर भोजन करना आदि... सब निश्चय ही व्यर्थ है ।

– महाभारत

गीता-अमृत

– पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

भगवद् गीता कहती है :

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्यु जरा व्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥

(१३.८)

इन्द्रियों के विषय में वैराग्य, अहंकार का अभाव तथा जन्म–मृत्यु, वृद्धावस्था तथा रोगों में बारम्बार दुःख और दोषों का दर्शन करना ।

जो विचारवान है उसे इन्द्रियों के क्षणिक सुख में विवेक का उपयोग करना चाहिए । विवेक का उपयोग करने से वैराग्य आता है ।

इन्द्रियों के आकर्षणों से वैराग्य धारण करना चाहिए । जिसके जीवन में वैराग्य नहीं है उसे बहुत

मुसीबतों एवं दुःखों का भोग बनना पड़ता है और मरने के बाद भी भवसागर में भटकना पड़ता है ।

शरीर, धन, मकान आदि जो कुछ भी साधन हैं वे सब प्रकृति के हैं । यह सब आता है और जाता है, बदलता रहता है और अंत में सब छोड़कर जाना पड़ता है । इससे इन साधनों में आसक्ति नहीं करनी चाहिए ।

जैसे सायकल तुम्हारा साधन है, मोटरसायकल, कार आदि सब तुम्हारे साधन हैं, उसी प्रकार हाथ, पैर, मन, बुद्धि तुम्हारे साधन हैं । इसलिए इन साधनों का न तो अहंकार करना न उन्हें 'मैं' मानना ।

हमारे मन, बुद्धि में संस्कार पड़े हैं कि मैं बी.ए. पास हूँ, मैं एम.ए. पास हूँ । परंतु तुम एम.ए. नहीं, तुम बी.ए. नहीं, तुम तो अनंत आत्मा हो । देखती हैं आँखें किन्तु लगता है कि मैं देखता हूँ, सुनते हैं कान, पर मानता है कि मैं सुनता हूँ । बोलती है जीभ पर लगता है मैं बोलता हूँ । विचार मन करता है पर मानता है कि मेरा विचार है । निर्णय बुद्धि करती है पर लगता है कि मेरा निर्णय है । इन सब साधनों में मेरेपन का 'अहं' है । शरीर तुम्हारा साधन है । जैसे सायकल तुम्हारा साधन है, मोटरसायकल, कार आदि सब तुम्हारे साधन हैं, उसी प्रकार हाथ, पैर, मन, बुद्धि तुम्हारे साधन हैं । इसलिए इन साधनों का न तो अहंकार करना न उन्हें 'मैं' मानना ।

वास्तव में साधनों की समानता–असमानता होती है, और यह जीव अहंकार कर बैठता है । वहाँ हम मार खा जाते हैं । जैसे 'मेरे पास कुछ नहीं है... मेरे पास इतना है... मैं कुछ नहीं जानता... मैं कुछ जानता हूँ।' 'कुछ नहीं जानता' यह भी तुम्हारा साधन है और 'कुछ जानता है' तो यह भी तुम्हारा साधन है । तुम्हारा निजस्वरूप तो अमाप है । इसे तुम जान लो तो जाननेवाला और न जाननेवाला जहाँ से सत्ता ले आता है उस सत्तास्वरूप में तुम स्थिर हो जाओगे ।

जन्ममृत्युजराव्याधि
दुःखदोषानुदर्शनम् ।

हमने बहुत सारे दुःखों को सहन कर फिर मनुष्य जन्म पाया है । जैसे कुम्हार के निभाड़े में घड़ों को परिपक्व होने के लिए निभाड़े की अग्नि को सहन करना पड़ता है वैसे ही हमारी देह को रज–वीर्य में से हाड़–माँस में परिवर्तित होने के लिए गर्भाग्नि में पकना पड़ता है ।

जीवन भर जिसे 'मेरा–मेरा' कहकर रखते रहे, जीवन भर जिन संबंधों को संभालते रहे, ये सब संबंध मृत्यु के एक झटके में छूट जायेंगे । जीवन भर जिस पूँजी को संभालकर रखा, पाँच वर्ष में दुगुनी करने के लिए रखा, वह दुगुनी होने के पहले ही जीव कब ऊठ जाये, कुछ कहा नहीं जा सकता ।

पड़ा रहेगा माल खजाना, छोड़ त्रियासुत जाना है ।
कर सत्संग अभी से प्यारे, नहीं तो फिर पछताना है ॥
खिलापिलाकर देह बढ़ाई, वह भी अग्नि में जलाना है ।
कर सत्संग अभी से प्यारे, नहीं तो फिर पछताना है ॥

मृत्यु को कभी–कभी याद कर लेना चाहिए । बुद्ध कहा करते थे कि जो मेरा शिष्य होना चाहता है, उसे तीन महीने के लिए सादृश्य योग करना होगा । स्मशान में जाकर बैठो, कोई मुर्दा आये तो समझो कि तुम्हारा शरीर आया मुर्दा बनकर । लकड़ियाँ रखी तो मानो कि मेरे पर रखी हैं, अग्नि लगायी तो मानो कि जिसको 'में' मान रहा था वह जल रहा है । तीन महीने निरंतर मुर्दों को जलते हुए देखो । उसका माँस–मज्जा जल जाय तो समझ लो कि जिसको 'मैं' मान रहा था उसका माँस–मज्जा जल गया । शरीर का नाक अच्छा है तो क्या और बुरा है तो क्या ? आँखें सुन्दर हैं तो भी क्या ? आखिर तो स्मशान की अमानत है ।

''बाबाजी ! हमने तो पूछा था कि बस्ती कहाँ पर रहती है ? और आपने तो स्मशान बताया ।''

बाबाजी ने कहा : ''वहीं आकर सब बसते हैं । सबका आखिरी डेरा तो वहीं है ।''

एक जीवन्मुक्त महापुरुष टाँग पर टाँग चढ़ाकर आकाश की ओर निगाहें रखकर बैठे थे । उन फकीर

> **बुढ़ापा आये, बीमारियाँ आयें उसके पहले तुम उपनिषदों के रहस्यों को जान लो । देखने की शक्ति क्षीण हो जाये उसके पहले जिससे देखा जाता है उसे तुम देख लो ।**

से कुछ यात्रियों ने पूछा : "बाबाजी ! बस्ती किधर रहती है ?" बाबाजी ने स्मशान की तरफ इशारा किया कि बस्ती वहाँ रहती है । अनजान व्यक्ति वहाँ जाकर वापस आये और बोले :

"बाबाजी ! हमने तो पूछा था कि बस्ती कहाँ पर रहती है ? और आपने तो स्मशान बताया ।"

बाबाजी ने कहा : "वहीं आकर सब बसते हैं । सबका आखिरी डेरा तो वहीं है ।"

जन्म को, जरा को, मृत्यु को, व्याधि को याद करो । यह शरीर तुम नहीं हो, तुम तो शाश्वत आत्मा हो । जीव का स्वभाव ज्ञानप्राप्ति करना है । क्योंकि उसकी उत्पत्ति ज्ञानस्वरूप परमात्मा से हुई है । जैसे हर चंचल तरंग की उत्पत्ति सागर से ही तो होती है। कोई भी तरंग तुम्हें सड़क पर दौड़ती हुई नहीं दिखेगी । ऐसे ही कोई भी स्फुरण तुम्हें बिना चैतन्य-सत्ता के नहीं मिल सकता । जैसे चंचल तरंगों को सागर के ऊपर देखकर सोच भी नहीं सकते कि समुद्र की गहराई में अद्भुत शांति होगी । ऐसे ही तुम्हारे मूल में परम शांति है, परम ज्ञान है, परम प्रेम है, परम आनंद है । परंतु ऊपर की उछलती हुई तरंगों में तुम बहे जा रहे हो इसलिए लगता है कि भगवान कोई परायी चीज है । वास्तव में ईश्वर ही तुम्हारा है और कोई चीज तुम्हारी नहीं हो सकती ।

जब शरीर भी तुम्हारा नहीं हो सकता तो और चीजें कब तक ? किसान के पास फूल थे तो वह कहता था, हमारे फूल हैं । माली की दुकान पर मालाएँ थी तो वह कहता था मेरा माल है । तुम्हारे हाथ में माला आ गयी तो तुम कहते हो कि मेरी माला है । अब यहाँ रख दी तो माला बाबाजी की हो गयी । लेकिन माला पंचभूतों की है और वहीं जा रही है। जलतत्त्व बाष्पीभूत होकर जा रहा है । जो जिसका है उसीमें जा रहा है । 'मेरा मेरा' तो सिर्फ बदलता आया है । ऐसे ही इस शरीर को माँ बोलती है मेरा बेटा है, बाप बोलता है मेरा पुत्र है, बहन बोलती है मेरा भाई है, मित्र बोलता है मेरा मित्र है, पत्नी बोलती है मेरा पति है । लेकिन यह तो मृत्यु की अमानत है और प्रतिदिन मृत्यु की तरफ जा रहा है । यह पंचभौतिक शरीर तुम्हारा नहीं है । यदि यह तुम्हारा होता तो तुम्हारे कहने में चलता । तुम नहीं चाहते कि बाल सफेद हो जायें पर सफेद हो जाते हैं, तुम नहीं चाहते कि झुर्रियाँ पड़ जायें पर पड़ जाती हैं, तुम नहीं चाहते कि बुढ़ापे में बीमारियाँ घेर लें लेकिन घेर लेती हैं । जब शरीर ही हमारा नहीं है तो शरीर के साथ संबंधित पदार्थ किस प्रकार हमारे हो सकते हैं ?

थोड़े दिनों के लिए व्यवहार में कह दो, ऊपर-ऊपर से कि 'यह हमारा .... यह हमारा' पर अंदर से ऐसी समझ रखो कि 'हरि ॐ तत् सत् और सब गपशप ।'

'हमारा-हमारा' करके अपने ज्ञान को मारा, अपनी जात को मारा । अपनी जात को मारकर भी जीव साधनों को 'मैं' मानता है और साधनों के साधन को 'मेरा' मानता है । 'यह सायकल मेरी है' बाहर से भले ही कह दें कि 'यह मेरी है' पर भीतर से यह समझ लेना कि यह सब वस्तुएँ तुम्हारी नहीं हैं पर जिसका यह सब है वह परमात्मा तुम्हारा है और तुम परमात्मा के हो । जीव का वास्तविक मूल केन्द्र शिव है । वह ज्ञानस्वरूप, प्रेमस्वरूप, आनंदस्वरूप है । जैसे तरंग का मूल पानी है वैसे ही जीव का मूल ब्रह्म है । इस जीव की स्वाभाविक चेष्टा अपने परमात्मा की ओर ही होती है । बालक जब बड़ा होता है तब वह माँ-बाप को पूछता ही रहता है : 'यह

> **जब तक मनुष्य को अपनी वर्तमान स्थिति की तुच्छता का ख्याल नहीं आता, और अपनी महान स्थिति को पाने की इच्छा नहीं होती तब तक भले ही ब्रह्माजी उपदेश देते हों या साक्षात श्रीहरि अवतरित हो जायें फिर भी विवेक नहीं जागेगा ।**

क्या है ? वह क्या है ?' उसे जानने की, ज्ञान की जिज्ञासा है । बचपन से ही बालक 'मैं कौन हूँ ?' यह पूछे उसके पहले ही यह थोप दिया जाता है कि 'तू गोविन्द है ... तू मोहन है ...' आदि–आदि । वह बेचारा इस कल्पित देह को ही 'मैं' मान लेता है और उसके असली 'मैं' का तो उसे पता ही नहीं चलता । भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि :

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥

जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि .... बुढ़ापा आये, बीमारियाँ आयें उसके पहले तुम उपनिषदों के रहस्यों को जान लो । देखने की शक्ति क्षीण हो जाये उसके पहले जिससे देखा जाता है उसे तुम देख लो । घरवाले तुम्हें स्मशान ले जायें उसके पहले तुम अपने 'मैं' को अपने स्वरूप के साथ मिला दो ।

जब तक मनुष्य को अपनी वर्तमान स्थिति की तुच्छता का ख्याल नहीं आता और अपनी महान स्थिति को पाने की इच्छा नहीं होती तब तक भले ही ब्रह्माजी उपदेश देते हों या साक्षात् श्रीहरि अवतरित हो जायें फिर भी विवेक नहीं जागेगा । जिस नाली में जिस जन्तु का जन्म हुआ है वह वहीं सुख मानता है और वहीं जीवन पूरा कर लेता है । कीचड़ का कीड़ा कीचड़ में ही आनंदित होता है । गधे को कचरे के ढ़ेर पर ही मजा आता है । मनुष्य भी जहाँ पैदा होता है, जिस वातावरण में पलता–बढ़ता है वहीं पर वह कल्पना की मनःभूमिका बनाकर वहीं सुख मान लेता है । यह माना हुआ सुख टिकता नहीं है । इसलिए माना हुआ सुख जिसके पास है उसके भीतर कुछ न कुछ सुख खटकता होगा । माना हुआ सुख मान्यता के आधीन है । जिस समय जैसी मान्यता होगी वैसा ही प्रतीत होगा । परंतु जाने हुए सुख को एकबार जान लेने के पश्चात् उसकी चिन्ता नहीं रहती । मान्यताएँ मन की होती हैं और मन बदलता रहता है । बचपन में हम सोचते होंगे कि अहाहा ! ...... तीसरी कक्षा पास हो जायें तो शांति । सातवीं कक्षा पास हो जायें तो शांति । ऐसा करते करते S.S.C. तक चला । फिर ग्रेज्युएट हो जायें तो शांति । परन्तु अपना शरीर अनित्य है । वैभव नाशवान है । मृत्यु प्रतिदिन पास आ रही है । अपना कर्त्तव्य यह है कि धर्मसंग्रह कर लें । जीवनदाता की मुलाकात कर लें, आत्मविद्या पा लें ।

अनित्यानि शरीराणि वैभवो नैव शाश्वतः ।
नित्यं संन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ॥

कबीरजी कहते हैं कि :

क्या करिये क्या जोड़िये, थोड़े जीवन काज ।
छोड़ी-छोड़ी सब जात हैं, देह गेह धन राज ॥
हाड़ बढ़ा हरिभजन कर, द्रव्य बढ़ा कछु देय ।
अकल बढ़ी उपकार कर, जीवन का फल एह ॥

कर–करके भी आखिर में क्या करेंगे ? देवताओं के दो महीने बीतते हैं तो अपने ६० वर्ष और देवताओं के चार महीने बीतते हैं तो हम आये और गये, जीवन पूरा हो जाय । कुछ खबर ही न रहे । हमारा एक वर्ष बीते तब देवताओं का एक दिन होता है और ऐसे १०० वर्ष देवता जीते हैं । देवों के भी राजा हैं इन्द्र । ऐसे १४ इन्द्र राज्य कर–करके चले जाते हैं तब ब्रह्माजी का एक दिन होता है । ऐसे ब्रह्माजी सो वर्ष जीते हैं । तुम्हारे सच्चिदानंद परब्रह्म अकाल पुरुष के आगे ऐसे अनंत ब्रह्माजी हो गये । उस पुरुष का साक्षात्कार करने के लिए तुम आये हो । उसके साथ तुम्हारा शाश्वत सम्बन्ध है ।

समय की धारा में सब बह रहा है । जिस समय दुःख आता है उस समय वह बड़ा भारी लगता है । परन्तु दो दिन के बाद उसका उतना प्रभाव नहीं रहता और दो वर्ष के बाद तो उसकी स्मृति भी नहीं रहती । सुख–दुःख तो दिन में कई बार आता–जाता रहता है । सुख आये तो भी सपना है और दुःख आये तो भी सपना है । सुख–दुःख को जानने वाला अन्तर्यामी ही बस अपना है ।

प्रजापति मनु का कहना है कि शील, स्वाध्याय, दान, शौच, कोमलता और सरलता ये सद्गुण द्विज के लिए वेद से भी बढ़कर हैं ।

– महाभारत

बड़ौदा में पू. बापू की ज्ञानवर्षा

(दिनांक : २८–२–९३)

प्रदर्शन मैदान पर आज सत्संग समारोह के प्रारंभ में दिव्य सत्संग–सरिता में लाखों मानव–हृदयों को हरिरस से सराबोर करनेवाले जीवन्मुक्त विश्ववंदनीय परम पूज्य संत श्री आसारामजी महाराज ने कहा :

"ईश्वर सबमें व्याप्त है । ईश्वर सुख–स्वरूप है, आनंद–स्वरूप है, प्रेम–स्वरूप है, फिर भी यह जीव मोहमाया से दुःख, क्लेश का अनुभव करता है । बार–बार जन्म लेना, 'मेरे–तेरे' के फँदे में पड़कर खराब कर्म करना, इसीमें जीवन को व्यर्थ गँवा रहा है । परंतु सब में व्यापक चैतन्यसत्ता, आत्मा–परमात्मा, ईश्वरों के ईश्वर महेश्वर के दर्शन के लिए जीव प्रयत्न नहीं करता यह कैसा दुर्भाग्य है ?

आहार का ज्ञान तो मच्छरों को भी होता है । मेरी दाढ़ी में उसे क्या मिलेगा ? आहार, निद्रा, भय और मैथुनमय सामान्य जीवन तो पशु भी जीते हैं ।"

सार्वभौमिक धर्म के विषय में समझाते हुए पूज्य बापू ने कहा कि :

"जो धर्म पालने में आता है उसी धर्म में दृढ़ रहना चाहिए । सभी मनुष्यों को सार्वभौमिक धर्म और सामाजिक धर्म इन दो धर्मों में अपने कर्त्तव्य का पालन करना अत्यंत जरूरी है । जो प्रेम परमात्मा के साथ करना चाहिए वह प्रेम यदि तुम मित्रों के साथ करोगे या संबंधियों के साथ करोगे तो उनके द्वारा दुःख ही मिलेगा । दुनिया के किसी भी ग्रंथ में सारवाली जो बातें हैं वह सब सनातन धर्म में से ही ली गयी हैं । जैसे मक्खन छाछ का सार है वैसे ही दुनिया के अन्य धर्मग्रंथों में जो–जो सत्य सार–तत्त्व है वह भारत के सनातन धर्मग्रंथों से ही लिया हुआ है ।

आज जो लोग 'अला बांधूं, बला बांधूं, प्रेत बांधूं' ऐसा कहकर ताबीज देते हैं वैसे टूने–फूने से लोगों को छलकर धर्म का सत्यस्वरूप समझाया नहीं जा सकता ।

तुम नेता हो तो जनता की सेवा करो । पुत्र हो तो माता–पिता की सेवा करो । लोगों का अहित करके, छल–कपट करके कोई सुखी नहीं हुआ है । परन्तु सबमें बसे हुए चैतन्यदेव के शाश्वत संबंध को याद करके ही परम सुखी हुआ जा सकता है ।"

विश्ववंदनीय, प्राणीमात्र के परम हितैषी प. पू. संत श्री आसारामजी बापू ने कहा कि :

"जन्मजात संबंध और संपादित संबंध–ये दोनों संबंध जिससे भासते हैं उस ईश्वरीय संबंध के साथ तादात्म्य करने के लिए मनुष्य को कटिबद्ध होना चाहिए ।"

सत्संग के दौरान श्रोता एकाग्रचित्त से ज्ञानामृत का रसपान करते मुग्ध हो गये थे । अविरत ज्ञानगंगा में जनता को सराबोर करते हुए पूज्य बापू ने आगे कहा कि :

"जिस पद को प्राप्त करने के लिए इन्द्र जैसा इन्द्र ललचाता है, उस पद को प्राप्त किये योगी को हर्ष नहीं होता यह कैसा आश्चर्य है !

आश्चर्यचकित हो गयी जनता को पूज्य बापू ने आत्मपद की महानता बताई । उसके बाद संकीर्तन में विशाल भक्त समुदाय 'मधुर मधुर नाम ..... हरि हरि ॐ....' के गुँजन से झूम उठा था ।

सिंहगर्जना करते पू. बापू ने तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कहा : "गांधीजी कहते थे कि जुल्म करना तो पाप है, जुल्म सहना दुगुना पाप है ।

तुम यदि मुसीबत में, आपत्ति में फँसे हुए हो तो गुण्डों के आधीन मत होना । उनसे हारकर दब मत जाना । सर्वेश्वर जो परमात्मा है उसीकी

जो प्रेम परमात्मा के साथ करना चाहिए वह प्रेम यदि तुम मित्रों के साथ करोगे या संबंधियों के साथ करोगे तो उनके द्वारा दुःख ही मिलेगा ।

शरण में जाना । वे गुण्डों को भी सद्बुद्धि देंगे, तुमको बचायेंगे, कल्याण करेंगे ।''

तुम यदि मुसीबत में, आपत्ति में फँसे हुए हो तब गुण्डों के आधीन मत होना । उनसे हारकर दब मत जाना । सर्वेश्वर जो परमात्मा है उसी की शरण में जाना ।

एकतान होकर सुन रहे श्रोताओं को पूज्य बापू ने कहा कि :

''गरीब, दीन–दुःखी को सहायता करो, अनपढ़ को पढ़ाओ पर ऐसा मत सोचो कि 'मैं पढ़ा रहा हूँ.... मैं सहायता करता हूँ... ।' बल्कि उस दीन–दुःखी, गरीब या अनपढ़ के अंदर स्थित परमात्मा को देखकर तुम उसकी सेवा करो तो यह तुम्हारी भक्ति हो जायेगी ।

कुछ अव्यवस्थाओं के कारण, अंग्रेजों के शोषण के कारण आज हमारा देश भले ही कंगला दिखे, परन्तु ऐसा नहीं है । अंदर से भी और बाहर से भी हम मालामाल हैं । यूरोप में इतना सोना नहीं है जितना भारत में सोना है । हम दिल के जवान हैं, हृदय के महान हैं । बाहर के कितने ही देशों में पानी नहीं मिलता, खाने के लिए आवश्यक अन्न नहीं मिलता, वैसा यहाँ नहीं है । इतना ही नहीं, जीवात्मा को सच्ची परमशांति दे सके ऐसा अद्भुत दिव्य ज्ञान केवल भारत में ही है ।

मनुष्य को प्रथम जरूरत है हवा की, फिर पानी की, फिर अन्न–वस्त्र की । इससे भी अधिक जरूरी है सच्ची शांति और सच्चा ज्ञान । ऐसी सच्ची शांति और सच्चा सुख आत्मज्ञानी महापुरुष ही दे सकते हैं । ऐसे ज्ञानी केवल भारत देश में ही मिल सकते हैं । आत्मज्ञान से उत्तम और कोई ज्ञान नहीं है, आत्मलाभ से उत्तम दूसरा कोई लाभ नहीं है । ऐसे आत्मज्ञानी योगी के दर्शन से, उनके मुख से बरसती अमृतमयी वाणी सुनने से असीम पुण्य होता है । ऐसे ज्ञान में लाखों लोगों को भागीदार बनाने में जाने–अनजाने जो लग जाता है वह भी महान पुण्यात्मा हो जाता है, वह कृतार्थ हो जाता है ।

विश्व के तमाम देशों में लाखों लोग सुविधा से रहते हों, परंतु लाखों–लाखों की संख्या में असुविधाओं के बीच भी एक संत को सुनकर शांति का, आनंद का अनुभव करते हों, तो ऐसा केवल भारत में ही है ।''

सिद्धपुर में पू. बापू का सत्संग हुआ तब सेफिया कॉलेज के मुस्लिम भाइयों ने भी 'जय रामजी' के नाम से पूज्य बापू को अपना लिया था, राम का नाम लेने में कंजुसी कैसी ?

एक नूर से सब जग उपजा !
कौन भले कौन मन्दे ?

उस विश्वनियंता परमात्मा का नाम लेने में संकोच कैसा ? तरबूज को सिंधी में 'हिंदाणुं, छांई', हिन्दी में 'कलींदा', अंग्रेजी में 'वॉटरमिलन' और गुजराती में 'तरबूच', 'कलिंगर' कहते हैं । एक ही तरबूज के इतने नाम हैं तो उस परमात्मा के विविध नाम हो जाय इसमें आश्चर्य क्यों ? नाम लेने में तकलीफ कैसी ?''

सनातन धर्म के प्रवक्ता, ऋषिजीवन के आचार्य, धर्मधुरंधर पूज्यपाद श्री बापू ने कहा कि :

''सनातन धर्म में परमात्मा का बारम्बार अवतार होता है । कभी रामरूप में, कभी कृष्णरूप में, कभी नानक, कभी कबीर, कभी रामकृष्ण, कभी रामतीर्थ आदि संतों के रूप में यदा–कदा परमात्मा का अवतरण होता है ।''

पूज्य बापू के सत्संग में बड़ौदा शहर के और आसपास के सेंकड़ों गाँवों, शहरों के एवं अन्य प्रांतों के मिलकर लाखों श्रद्धालु अपने जीवन में धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

❀

जो प्रतिदिन वेदों का सांगोपांग स्वाध्याय करता है, किंतु अतिथि का सत्कार नहीं करता है, तो उसका जीवन व्यर्थ है, क्योंकि अतिथि की मारी गई आशा मनुष्य के समस्त शुभ–कर्मों का नाश कर देती है ।

– महाभारत

होलिकोत्सव शिविर में पू. बापू की अमृतवाणी

(दिनांक : ७–३–९३ सुरत आश्रम)

आज होली पर्व के दिन हजारों साधकों, भक्तों एवं जनता की विशाल जनमेदनी को हरिकीर्तन में सराबोर करके, अंतर–आत्मा में विश्रांति पाने के आदेश के साथ पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू ने कहा कि :

"ध्यान से अहंकार पिघलता है और चित्त निर्मल बनता है । आत्म–विश्रांति का द्वार खुलता है । संसारी प्रेम का पल्ला न पकड़ना. । ईश्वर का पल्ला पकड़ना । लोभी धन के लिए हँसता–रोता है, मोही परिवार के लिए हँसता–रोता है, परन्तु भगवान का भक्त तो भगवान के लिए ही हँसता–रोता है । वह भगवान को अपना बनाता है । अहंकार का पोषण करने के लिए नहीं किन्तु ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए जीवन मिला है । यह बात भूलना नहीं ।"

आज उपस्थित जनता को संबोधित करते हुए पूज्य बापू ने कहा कि :

"हिरण्यकशिपु अहंकारी है और भक्त प्रहलाद शरणागति का स्वरूप है । ईश्वर–शरणागति अंत में अहंकार पर विजय दिलाती है । आज तो सबके हृदय में अहंकार की होली है । उसे शांत करने के लिए सत्संग रूपी शरणागति और प्रहलाद जैसी भक्ति करनी चाहिए ।"

लोकप्रिय विश्वसंत श्री आसारामजी बापू ने कहा कि :

"परदुःखकातरता से आत्मबल का विकास होता है । मनुष्य में इतनी शक्ति है कि वह मुरदे को जीवित कर सकता है । सती सावित्री ने अपने मृतक पति को यमराज के पास से पुनः जीवित किया था । राजा ऋतुध्वज ने मदालसा रानी को जीवित किया था । अर्जुन, मुचुकुन्द, खट्वांग, नारद वगैरह स्वर्ग में सदेह आ–जा सकते थे । उनके पास स्वर्ग की सीढ़ी थी । आज का मनुष्य भी यदि चाहे तो स्वर्ग में जा सकता है । परन्तु उसे अपने जीवन को सदाचार, सत्य, परहितपरायणता, सेवा, संयम, निर्भयता आदि पुष्पों से सुशोभित करना चाहिए । भगवान के भक्त को सुख में आसक्त और दुःख में भयभीत नहीं होना चाहिए । प्रहलाद अग्नि में जला नहीं, समुद्र में डूबा नहीं ।"

हिरण्यकशिपु अहंकारी है और भक्त प्रहलाद शरणागति का स्वरूप है । ईश्वर-शरणागति अंत में अहंकार पर विजय दिलाती है । आज तो सबके हृदय में अहंकार की होली है । उसे शांत करने के लिए सत्संग रूपी शरणागति और प्रहलाद जैसी भक्ति करनी चाहिए ।

आज साधना शिविर के दूसरे दिन के प्रारंभ में पूज्यपाद आसारामजी बापू ने कहा कि :

"जिस प्रकार मनुष्य धन में सत्यबुद्धि करता है तो अपने को धनवान मानता है, उसी प्रकार जिसकी ईश्वर के साथ सत्यबुद्धि हो जाये तो वह स्वयं ईश्वर ही है । स्वस्वरूप ईश्वर का ज्ञान हो जाये तो वह व्यक्ति ईश्वर जैसा ही पूज्य है ।"

आज समाजसुधारक खुद ऐसा समझते हैं कि भगवान ने यह दुनिया खराब बनाई है । उसे हम सुधारते हैं । इस संसार को सुखी करने के लिए हम प्रयत्न कर रहे हैं । इन समाजसुधारकों को सलाह देते हुए पूज्य बापू ने कहा कि :

"समाज का, संसार का, सच्चा सुधार तो वही कर सकता है जो परम सुधारक है, जो सृष्टि का नियंता है । जिसने परमात्मा का अनुभव किया है ऐसे महापुरुष ही समाज का सच्चा सुधार कर सकते हैं ।"

आज के कलिकाल में भी सहज रूप से निमेषमात्र में भक्ति का दान देकर निहाल कर देने वाले, हजारों भक्तों के हृदय में ज्ञानगंगा बहाकर अपूर्व उत्साह, ज्ञान और ईश्वरीय आनंद की ज्योति को प्रकट करनेवाले जीवन्मुक्त संत परम पूज्य आसारामजी बापू ने कहा कि :

"जो दूसरों का शोषण करके, दूसरों का अहित करके, परिस्थितियों का

दूसरे धर्मों के उपदेशक स्वयं को भगवान का पुत्र या पैगम्बर मानते हैं । जबकि सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति तो अपने परिच्छिन्न अहं को ब्रह्म में विलय कर ब्रह्मरूप बनाकर 'अहं ब्रह्मास्मि' के ऊँचे शिखर पर पहुँचा देते हैं ।

सर्जन करके तथा वासना को बढ़ाकर सुखी होना चाहता है वह परम सुखी नहीं हो सकता । वह एक जन्म तो क्या परंतु हजार जन्मों के बाद भी परम सुखी नहीं हो सकता । दुनिया की सारी वस्तुएँ प्राप्त करके, धन, सत्ता आदि प्राप्त करके भी कभी पूर्ण सुखी नहीं हो सकता । पूर्ण सुखी होना हो, पूर्ण जीवन का अनुभव करना हो, तो जो पूर्ण है ऐसे परमात्मा का पूर्ण अनुभव कर लेना चाहिए, साक्षात्कार कर लेना चाहिए । तभी परम सुखी बना जा सकता है ।''

भारतीय संस्कृति की महानता बताते हुए पूज्यपाद आसारामजी बापू ने कहा कि :

''दूसरे धर्मों के उपदेशक स्वयं को भगवान का पुत्र या पैगम्बर मानते हैं । जबकि सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति तो अपने परिच्छिन्न अहं को ब्रह्म में विलय कर ब्रह्मरूप बनाकर 'अहं ब्रह्मास्मि' के ऊँचे शिखर पर पहुँचा देते हैं । वहाँ जीव और ईश्वर का भेद नहीं रहता । जैसे सिन्धु में बिन्दु मिल जाये वैसे ही ईश्वर में जीव मिल जाता है, ब्रह्मरूप बन जाता है । जैसे घटाकाश महाकाश से अभिन्न है वैसे ही जीवात्मा परमात्मा से अभिन्न है । भारतीय संस्कृति का, वेदों का ऐसा दिव्य संदेश है ।''

हजारों शिविरार्थियों, भक्त समुदायों को ज्ञानामृत से, हरिरस से परितृप्त करके वेदांत का गूढ़ रहस्य प्रकट करते हुए परम पूज्य आसारामजी बापू ने कहा कि :

''ब्रह्म से ब्रह्म का अनुभव करना, ईश्वर से ईश्वरत्व का साक्षात्कार करना यही सर्वोपरि साधना है । भगवद् दर्शन तो हो जाता है परन्तु भगवत्तत्त्व का साक्षात्कार कर लेना यही साधना की पराकाष्ठा है ।''

सत्संग–सरिता में हजारों भक्तों को सराबोर करते हुए पूज्य बापू ने कहा कि :

''सत्संग से ही मानव को उत्तम मार्ग, उत्तम कार्य और उत्तम जीवन की तरफ जाने का सही मार्ग मिल सकता है । खुशामद, वाहवाही, प्रशंसा सेठ या साहब की न करो, किन्तु सेठ या साहब में जो पूर्ण परमात्मा है उसी की प्रशंसा, खुशामद या वाहवाही करके प्रसन्नता एवं आनंद प्राप्त करना चाहिए ।''

ॐ आनंद... वास्तविक आनंद... सबमें छुपे हुए सच्चिदानंद परमेश्वर का आनंद ...

कीड़ी में तू नानो लागे हाथी में तू मोटो क्यूँ ।
बन महावत ने माथे बैठो हांकणवाळो तू को तू ।
ऐसो खेल रच्यो मेरे दाता जहाँ देखूँ तहाँ तू को तू ॥
ले झोळी ने मागण लाग्यो देवावाळो दाता तू ।
कर चोरी ने भागण लाग्यो पकड़वा वाळो तू को तू ।
ऐसो खेल रच्यो मेरे दाता जहाँ देखूँ तहाँ तू को तू ॥
बन बालक ने रोवा लाग्यो छानो राखणवाळो तू ।
जल थल में तू ही बिराजे भूत जंत के भेळो तू ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो...
गुरु भी बन के बेठो तू और चेला भी बन के बेठो तू ।
ऐसो खेल रच्यो मेरे दाता जहाँ देखूँ तहाँ तू को तू ॥

❀

कर्म को गुरुकृपा के आश्रय में होने देना । उसका अहंकार कभी नहीं करना । बिना कृपा का कर्म तुम्हें अहंकारी बना देगा । भगवान व्यास कहते हैं कि यहाँ सब व्यवस्था है किन्तु तुम्हारे अहंकार ने अव्यवस्था खड़ी कर दी है । अतः अहंकार करके कर्म की गठरियाँ बाँधना नहीं ।

सद्गुरु की सेवा किये बिना शास्त्रों का अध्ययन करना मुमुक्षु साधक के लिये समय बरबाद करने के बराबर है ।

भावनगर में सत्संग-वर्षा

[दिनांक : १८-३-९३, संत श्री आसारामजी नगर, जवाहर मैदान, भावनगर ।]

बहुत वर्षों तक प्रतीक्षा करने के बाद प्राप्त हुए जीवन्मुक्त परम पूज्य संत श्री आसारामजी महाराज के गीता भागवत सत्संग समारोह का शुभारंभ दिनांक १८-३-९३ के दिन प्रातःकाल ९-३० बजे जवाहर मैदान में हुआ तब विशाल मंडप श्रद्धालु जनता से खचाखच भरा हुआ था ।

पूज्य बापू के दर्शन के लिए पलकें बिछाये हुए राह देखते श्रद्धालु भक्त नर-नारियों के समुदाय को अपनी भवभयहारी, पापनाशक, पावन वाणी में संबोधित करने से पूर्व पूज्यश्री ने परंपरागत तरीके से शंखनाद किया था । पूज्य बापू ने कहा :

"आज दस वर्ष के पश्चात् प्रयोगशाला के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि आत्मविश्रान्ति पाये हुए महापुरुषों की आँखों में से जो किरणें निकलती हैं और जिस पर पड़ती हैं उसके १ मिलीलीटर रक्त में १५०० श्वेतकणों की वृद्धि हो जाती है । रोगप्रतिकारक-शक्ति, प्रसन्नता, आनंद, निश्चिंतता, शांति आदि दैवी गुणों की वृद्धि होती है । यही बात हमारे ऋषि-मुनि, पूर्वज, अनुभवी बुजुर्ग आदिकाल से कहते आये हैं कि सज्जनों के संग से तन-मन का स्वास्थ्य सुधरता है । बुद्धि में परमात्मा के ज्ञान का प्रकाश होता है ।"

कुंडलिनी योग के अनुभवनिष्ठ ज्ञाता और शक्तिपात दीक्षा के समर्थ सद्गुरु श्री आसारामजी महाराज ने कहा कि : "गीता के श्लोकों का पाठ करने से, भगवन्नाम कीर्तन मात्र से करोड़ों तीर्थ करने का फल मिलता है । जिसके मन में हरिकथा सुनने के संस्कार नहीं हैं, उसके कान साँप के बिल जैसे हैं । जिसकी जिह्वा हरिनाम का कीर्तन नहीं करती, उसकी जिह्वा मेढ़क की जिह्वा के समान है । हरिनाम सुनकर जिसका हृदय हर्षित नहीं होता वह हृदय कठोर वज्र जैसा है ।

संसार प्रतिपल सरकता जाता है । इस प्रतिपल सरकते संसार में जो आसक्ति करता है वह सरकता जाता है । कुटुम्बीजन आखिरी में स्मशान में छोड़ जायें उसके पहले परमात्मा के साथ मुलाकात कर लेनी चाहिए । कान सुनने की शक्ति खो दें उसके पहले हरिकथा सुन लेनी चाहिए । नेत्रों की दृष्टि कमजोर हो जाये उसके पहले संतदर्शन कर लेना चाहिए । बुद्धि की निर्णय करने की शक्ति क्षीण हो जाये उससे पहले बुद्धिदाता की पहचान करने के लिए बुद्धि का पूरा-पूरा सदुपयोग कर लेना चाहिए ।"

प्राणीमात्र के परम हितैषी पूज्यापाद आसारामजी बापू ने कहा :

"स्वर्गलोक पुण्य के फल का भोग करने का स्थान है । नर्क पाप के फलों का भोग करने की जगह है । ये दोनों भोगभूमि हैं । परन्तु मृत्युलोक कर्मभूमि है । यहाँ का मनुष्य चाहे तो अपना संपूर्ण कल्याण यहीं पर कर सकता है । यहीं अक्रोध से क्रोध पर, क्षमा से द्वेष पर, प्रेम से ईर्ष्या पर विजय पा सकता है । यहीं पर प्रकृति में जन्म-मृत्यु होता है किन्तु मनुष्य यदि पुरुषार्थ करे, संतों का संग करे तो पाप और पुण्य से मुक्त होकर जन्म-मृत्यु के चक्र से भी मुक्त हो सकता है । नश्वर देह, इन्द्रियाँ और मन जिसकी सत्ता से चलते हैं, उसकी ओर यदि दृष्टि हो तो नश्वर का आकर्षण घट जाये और परमात्मा का ज्ञान हो जाये । तुम्हारा शरीर संसार की जाति का है । संसार पाँच भूतों से बना हुआ है । उसमें परिवर्तन चलता रहता है । संसार की तरह शरीर में भी परिवर्तन चलता रहता है । तुम ईश्वर की जात के हो । जैसे ईश्वर अविनाशी, अविचल है उसी प्रकार तुम भी निश्चित नारायण परमात्मा हो ।

जिसके मन में हरिकथा सुनने के संस्कार नहीं हैं, उसके कान साँप के बिल जैसे हैं । जिसकी जिह्वा हरिनाम का कीर्तन नहीं करती, उसकी जिह्वा मेढ़क की जिह्वा के समान है । हरिनाम सुनकर जिसका हृदय हर्षित नहीं होता वह हृदय कठोर वज्र जैसा है ।

परमात्मा की जात और तुम्हारी जात एक है । भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं :

ममैवांशो जीवलोके
जीवभूतः सनातनः ।

गीताचार्य पूज्य बापू ने कहा :

''गीता भगवान के मुख में से निकली है । गंगा भगवान के चरणकमल में से निकली है । गंगा में स्नान करने से पापों का नाश होता है । किन्तु जीते-जी मुक्ति पाने की युक्ति गीता देती है । गीता चिंता मिटाने की, हिंमत भरने की, निराशा भगाने की, अज्ञान मिटाने की जीवनदृष्टि देती है । आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक शांति तो आती और जाती है परन्तु गीता तो परम शांति देती है जो कभी भी नष्ट नहीं होती । जीते-जी और मृत्यु के समय भी परम शांति में स्थित होकर गीताभ्यासी कभी विचलित नहीं होता ।

जो कर्म के फल का भोक्ता बनता है वह बंधन में पड़ता है । भाई, बहन, माँ, बाप, सेठ, नौकर सबकी सेवा की किन्तु जो अपने आत्मस्वरूप की जागृति न की तो सब मिथ्या है । 'मैं न रहूँ तो यह सुन्दर सेवाकार्य कौन करेगा ?' यह सोचना मिथ्या है । परमात्मा के संबंध से जो सेवा करता है उसकी सेवा भक्ति बनती है ।''

पूज्य बापू ने एक बात बड़ी जोरदार कही :

''आज के विज्ञान के साथ यदि आध्यात्मिकता नहीं जुड़ेगी तो यह विज्ञान समाज को मृत्यु के मुख में धकेल देगा । विज्ञान के साथ प्रेम और वेदान्त का तत्त्वज्ञान होगा तभी समाज की व्यवस्था सुरक्षित रह सकेगी । चाहे जो राजा आ जाये परन्तु यदि आत्मज्ञान नहीं होगा तो लोग दुःखी ही रहेंगे । आज रोटी की जरूरत है इस बात का इन्कार नहीं है, परन्तु इसके साथ प्रत्येक देश में आत्मज्ञान की सख्त जरूरत है । बस्ती बढ़ाने की जरूरत नहीं है परन्तु जितनी बस्ती है उसे प्रेम, देशभक्ति और समाजसेवा का गुण सिखाने की जरूरत है । आप जो एक कौर खाते हैं वह भी कितने ही जीवों के पास से छीनकर आपके पास लाया जाता है । उससे जो रस बनता है उसका उपयोग दूसरों को दुःखी करने में, क्लेश देने में, केवल खाद बनाने में नहीं करना । उसके रस से परमात्मा की भक्ति, बंदगी और प्रार्थना हो इसका ख्याल रखना।''

आज के विज्ञान के साथ यदि आध्यात्मिकता नहीं जुड़ेगी तो यह विज्ञान समाज को मृत्यु के मुख में धकेल देगा । विज्ञान के साथ प्रेम और वेदांत का तत्त्वज्ञान होगा तभी समाज की व्यवस्था सुरक्षित रह सकेगी ।

पूज्य बापू ने कहा कि प्राणीमात्र के परम सुहृद परमात्मा सुख और दुःख की गहराई में भी हैं । सुख देकर, मान देकर प्रभु तुम्हारा उत्साह बढ़ाते हैं । जबकि दुःख देकर, अपमान देकर तुम्हारा अहंकार घटाते हैं । हमेशा किसी का सुख-दुःख टिकता नहीं । ये सुख-दुःख रूपी द्वन्द्वों से मुक्त करने के लिए परमात्मा की अनुकंपा है । जो प्रेम परमात्मा से करना चाहिए वही प्रेम अगर पैसे से किया जायगा तो दुःख देगा । जो प्रेम पत्नी, पुत्र और परिवार से किया जायगा वह भी मोह बढ़ाकर दुःख ही देगा । इसलिए परमात्मा से निरपेक्ष प्रेम करो । तुम परमात्मस्वरूप होने लगोगे ।

सुख की इच्छा और दुःख के भय से हृदय अशुद्ध होता है । वह अशुद्ध हृदय साबुन से शुद्ध नहीं होगा परन्तु हरिनाम कीर्तन, सत्संग और सन्मति से ही हृदय शुद्ध हो सकता है ।

इसलिए सावधान होकर सत्संग और साधना करके सन्मति से सत्स्वरूप ईश्वर का अनुभव कर लो ।

❀

बुद्धिमान पुरुष संसार की चिन्ता नहीं करते लेकिन अपनी मुक्ति के बारे में सोचते हैं । मुक्ति का विचार ही त्यागी, दानी, सेवापरायण बनाता है । मोक्ष की इच्छा से सब सद्गुण आ जाते हैं । संसार की इच्छा से सब दुर्गुण आ जाते हैं ।

राष्ट्र को पू. बापू का दिशानिर्देश

'गुजरात समाचार' दैनिक को दी गई मुलाकात में से कुछ अंश । दिनांकः २५ मार्च १९९३, भावनगर

आसारामजी नगर, भावनगर में गीता भागवत सत्संग समारोह में विशाल मानव समुदाय को जिन्होंने अपनी प्रभावशाली वाणी से बांध रखा, वे संत श्री आसारामजी बापू ने 'गुजरात समाचार' दैनिक के लिए विशेष समय निकाल कर एक मुलाकात दी थी । बुधेल गाँव में स्थित 'हरि ॐ मौनमंदिर' में जहाँ पूज्य बापू का निवास था वहाँ यह वार्तालाप रखा गया था ।

इस मुलाकात में पूज्य आसारामजी बापू ने राजकीय परिस्थिति, धर्म की होती हुई उपेक्षा, देश की गंभीर परिस्थिति, युवानों के ऊपर पाश्चात्य संस्कृति का असर, धर्मनिरपेक्षता के नाम पर होते हिन्दू प्रजा के ऊपर अन्यायों की विस्तृत छानबीन की थी । बीच-बीच में बापू ने आज की राज्य-व्यवस्था और धर्म की उपेक्षा के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया था ।

'आज का संदर्भ बदलता रहता है । पहले के वर्षों की अपेक्षा अयोध्याकांड के बाद हिन्दूओं का प्रभुत्व बढ़ने लगा है। इस विषय में आपका क्या मानना है ? अभी इस दिशा में कितना आगे बढ़ना है ? धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दूओं के साथ अन्याय हो रहा है। क्या ऐसा नहीं लगता ?' इन प्रश्नों के जवाब में पूज्य आसारामजी बापू ने बताया कि :

"आज नहीं तो कल यह परिस्थिति आने ही वाली थी । मैं राजस्थान गया था तब वहाँ मेरे पास यह बात रखी गई थी कि राजस्थान में दो बोर्ड हैं : राजस्थान देवस्थान बोर्ड कि जिसमें सभी जाति के लोग सदस्य हैं और सरकार के द्वारा संचालन होता है, और दूसरा वकफ बोर्ड जिसमें केवल मुसलमान सदस्य ही होते हैं और उन्हीं के द्वारा संचालन होता है । हिन्दू मंदिरों की करोड़ों की आय सरकार अपने पास रखती है । जबकि वकफ बोर्ड का एक पैसा भी सरकार नहीं ले सकती । ऐसा देखता हूँ तो मेरा हृदय व्यथित हो जाता है । हमारी किसी भी पार्टी के साथ शत्रुता नहीं है पर प्रजा को न्याय मिलना ही चाहिए । संतों का हृदय यह सब देखकर दुःखता है ।

जब-जब संतों पर जवाबदारी आई है तब तब संतों ने उसे निभाया है । प्रजा में भी अब जागृति आई है । एक ही देश में दो अलग-अलग कानून किसी भी देश के लिए अच्छी बात नहीं है ।"

'हिन्दू राष्ट्र की स्थापना होगी ?' इस प्रश्न के जवाब में पू. बापू ने कहा :

"यह बाद का प्रश्न है पर अन्याय तो नहीं होना चाहिए । राष्ट्र के लोगों का जो संकल्प होगा वही होगा । लोग कहते हैं, नेता कहते हैं कि देश तरक्की कर रहा है । पर युवक-युवतियों के लिए इससे खराब समय और कौन-सा हो सकता है ? हमारी संस्कृति नष्ट होने लगी है । पाश्चात्य संस्कृति का असर बढ़ता जा रहा है । क्लब और चलचित्र युवकों को अधःपतन के मार्ग की ओर ले जा रहे हैं । भारतीय संस्कृति का जबरदस्त इतिहास है । आज हम अधःपतन के किनारे खड़े हैं तब इस दिशा में सावधान होना पड़ेगा, प्रजा को विचार करना पड़ेगा ।"

'तो प्रजा को क्या करने की जरूरत है ? मात्र योग से ही इस प्रश्न का हल होगा ?' इस विषय में पूज्य बापू ने बताया :

"मात्र ध्यान - योग ही नहीं, कर्म भी जरूरी है । ध्यान योग से शांति और आनंद आता है । मनुष्य के विचारों में परिवर्तन आता है । जिस मनुष्य का आध्यात्मिक पतन हुआ हो वह मनुष्य देश के काम का

हिन्दू मंदिरों की करोड़ों की आय सरकार अपने पास रखती है । जबकि वकफ बोर्ड का एक पैसा भी सरकार नहीं ले सकती । ऐसा देखता हूँ तो मेरा हृदय व्यथित हो जाता है । हमारी किसी भी पार्टी के साथ शत्रुता नहीं है पर प्रजा को न्याय मिलना ही चाहिए । संतों का हृदय यह सब देखकर दुःखता है ।

नहीं है । आध्यात्मिक जीवन वाले लोग ही देश का पुनरुत्थान कर सकेंगे । ध्यान योग सहित का कर्मयोग खिल उठता है । ध्यान योग के बिना का कर्मयोग मात्र दिखाने के लिए की हुई सेवा है, स्वार्थ और अहंकार से वह भरपूर होती है ।''

जिस मनुष्य का आध्यात्मिक पतन हुआ हो वह मनुष्य देश के काम का नहीं है । आध्यात्मिक जीवन वाले लोग ही देश का पुनरुत्थान कर सकेंगे । ध्यानयोग सहित का कर्मयोग खिल उठता है । ध्यानयोग के बिना का कर्मयोग मात्र दिखाने के लिए की हुई सेवा है, स्वार्थ और अहंकार से वह भरपूर होती है ।''

आज देश में आतंक और अशांति होने के बावजूद भी लोग आनंद से रह रहे हैं उसके पीछे भारतीय संस्कृति का बड़ा योगदान है । विफलता मिलती है तो विषाद होता है और सफलता मिलती है तो हर्ष होता है, किन्तु गांधीजी तो सफलता और विफलता दोनों में आनंद में रहते थे । अंग्रेजों का कमीशन आया था । यह कमीशन आजादी के प्रश्न को उलझाने के लिए आया था । चर्चाएँ चली किन्तु गांधीजी सम्मत न हुए । सुशीला रसोईघर में लौकी काट रही थी । वहाँ जाकर गांधीजी ने कहा :

''मैं दु:खी क्यों होऊँ ? देश को आजाद करना यह भी ईश्वर का काम है । लौकी काटता हूँ यह भी ईश्वर का काम है ।''

धर्म ने ही गांधीजी में हिम्मत और धीरज तथा आत्मबल की प्रेरणा की थी । आजादी धर्म से ही आई है । गांधीजी कहते हैं कि मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाना ये गुलामी की ही निशानियाँ हैं । (नवजीवन, दिनांक २७-३-१९३७)

भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह ने कहा कि :

''भारत की सब बुराइयों का एकमात्र इलाज सशक्त और संगठित हिन्दू समाज है ।''

सर्वधर्मसमभाव, धर्म-निरपेक्षता के विषय में बयान देते हुए उन्होंने कहा :

''सर्वधर्म समभाव को हम मानते हैं । किन्तु धर्मनिरपेक्षता यह बात गले से नीचे नहीं उतरती । ये सभी को उल्लू बनाने की बातें हैं । मिडल ईस्ट देशों में तुम कोई शिखरवाला मंदिर नहीं बना सकते । यहाँ रोड़ पर चाहे जहाँ मस्जिद बनाई जा सकती है । भारत मानो उजड़ा हुआ खेत है । यह अब और नहीं चलेगा । देश की अस्मिता के लिए अब कुछ करना पड़ेगा । प्रजा के साथ खूब खेल खेला गया । अब प्रजा त्रस्त हो गई है ।''

देश की आर्थिक तबाही के विषय में पू. बापू ने कहा :

''आज विदेश की बैंकों में मंत्रियों, मुख्य मंत्रियों आदि के सबके खाते हैं । वहाँ सब धन के ढेर लगाते हैं और देश में गरीब लोग रोटी तक के लिए तरसते हैं । सरकारी खर्चों में कटोतरी की जरूरत है । उसी प्रकार प्राइवेट नौकरी में सेठों के उदार होने की जरूर है । मेहनत करने वाले लोगों के लिए उदारता बढ़ानी चाहिए । काम करने वाले लोगों को चाहो । ऐसे काम में से उत्पन्न धन कारखाने वालों को सुख देने वाला, आनेवाली पीढ़ियों को सुख देने वाला बनेगा ।''

कितने ही राजनीतिज्ञ धर्म से दूर भागते हैं अथवा अपने को धर्मनिरपेक्ष मानते हैं । इस विषय में पू. बापू ने विचार व्यक्त करते हुए कहा :

''प्रकृति में न्याय है । अभी भारतवासियों में कुर्सी की लालच, पाश्चात्य संस्कृति का असर और प्रत्येक का एक-दूसरे का शोषण करने का भाव है । अंत में सब दु:खी होते हैं । समाज का एक भाग गरीबी से पीड़ित है, दूसरा भाग धन को व्यर्थ गँवाते थकता नहीं

गांधीजी कहते हैं कि मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाना ये गुलामी की ही निशानियाँ हैं ।
(नवजीवन, दिनांक : २७-३-१९३७)

है। विवेकानंद कहते थे :

'कहलाने वाला बड़ा वर्ग स्वार्थ हेतु धन का लाभ लेता है । मध्यम वर्ग ही धर्म का सच्चा आनंद प्राप्त कर सकता है ।'

अभी की गंभीर परिस्थिति, आतंकवाद, बड़ी संख्या में मानव हत्याओं के बीच अब लोगों की नजर संतों की ओर है, तब आज की परिस्थिति के लिए जवाबदार लोगों की कदमपोशी तो किसी भी संयोगों में होनी ही नहीं चाहिए । ऐसे लोग गद्दार हैं । देशद्रोही हैं । वे अपने भाई कैसे ? हमारे देश का अन्न खाकर हमारे ही देश का ध्वज जलायें तो कैसे चले ? हमारे धर्म की अस्मिता मिट रही है । हिन्दू स्त्रियों के साथ मुसलमानों के बढ़ते जाते विवाह यह बताते हैं कि हिन्दुत्व का गौरव हम भूल गये हैं ।

आज के युवकों को अपनी संकल्प-शक्ति और संयमशक्ति का विकास हो ऐसा सीख लेना चाहिए । मुस्लिम राज्यों में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य है । भारत में धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती । गीता, योगवाशिष्ट ऐसे ग्रंथ हैं कि जो किसी एक संप्रदाय के नहीं हैं । ऐसे ग्रंथों की शिक्षा भारत में अनिवार्य रूप से अभ्यासक्रम में सम्मिलित करनी चाहिए । प्राथमिक कक्षाओं से लेकर महाविद्यालयों तक गीता को एक विषय के रूप में सम्मिलित करो । बालकों में बचपन से ही यदि गीता के संस्कार आयेंगे तो देखो कैसी उत्कृष्ट भावि पीढ़ी हमको मिलेगी । महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को योगवाशिष्ट सिखाओ । प्रत्येक जाति के युवकों में छुपी हुई जबरदस्त शक्ति प्रकट होने लगेगी ।

आप जगत के प्रभु बनो अन्यथा जगत आप पर प्रभुत्व जमा लेगा । ज्ञान के मुताबिक जीवन बनाओ अन्यथा जीवन के मुताबिक ज्ञान हो जायगा । फिर युगों की यात्रा से भी दुःखों का अन्त नहीं आयेगा । अतः इस मनुष्य शरीर में ही मुक्ति प्राप्त कर लो ।

श्री नारायण स्वामी

(संत चरित्र)

सन् १९५६ के आसपास की घटना है । मियाँगाँव स्टेशन के आगे नर्मदा किनारे चाणोद-कर्नाली गाँव है। वहाँ एक संत हो गये श्री नारायण स्वामी । पूर्व जीवन में वे न्यायाधीश के पद पर सेवारत थे । जैसे लोगों के साथ न्याय करते थे वैसे अपने साथ भी पूरा न्याय करते थे । शरीर को जीवित रखने के लिए नौकरी तो करते थे लेकिन आत्मा का रस पाने के लिए प्रतिदिन ध्यान भी करते थे ।

अंग्रेजों के शासन के वक्त की बात है । एक आदमी को फाँसी की सजा देनी थी । जुरी में पाँच जज बैठे थे । इनको भी उसमें बैठने का अवसर मिला । मुजरिम को जब जुरी के समक्ष पेश किया गया तो उसका निर्दोष चेहरा देखकर उनका हृदय पुकार उठा कि :

'यह व्यक्ति दोषी नहीं हो सकता ।'

परन्तु हाइकोर्ट का ऑर्डर था और उस दिन उसे फाँसी देनी थी । बंगाली न्यायाधीश ने बड़ी दृढ़तापूर्वक कहा कि :

''इसे फाँसी की सजा देना उचित नहीं है ।'' उन्होंने उसे बचाने के लिए भरसक प्रयास किये । शेष चार न्यायाधीशों ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया । आपस में 'तू-तू मैं-मैं' हो गई और फाँसी का जो नियत समय ५ बजे का था उसकी जगह ५.३० बज गये । तब ब्रिटिश-शासन की बड़ी कचहरी से तार आया कि उस मुझरिम को रिहा कर दिया जाय, वह निर्दोष है ।

बंगाली न्यायाधीश ने जुरी के सदस्यों को बड़े ही कठोर शब्दों में कहा :

''यदि नियत समय पर उस आरोपी को फाँसी लग जाती फिर पूरा ब्रिटिश शासन उल्टा होकर टंग जाता तो भी उस बेचारे के प्राण वापिस लानें में असमर्थ ही रहता । धन्य है उस अंतर्यामी परमात्मा को जिसने मुझे स्पष्ट प्रेरणा देकर एक निर्दोष का जीवन बचाने में निमित्त बनाया । अब तो मैं उसी परमात्मा की खोज

करते आयेंगे उनके घर की भिक्षा लेंगे । परिवारों ने भी आपस में भिक्षा के दिन बाँट लिये । फिर भी भीड़ बढ़ती ही गई । आखिर वे बाबा बद्रीनाथ चले गये । लोग भी बद्रीनाथ जा पहुँचे ।

जिनकी अर्चना-पूजा करते हैं उनमें अगर तुम्हारी दृढ़ श्रद्धा और संकल्प है तो भगवान वहाँ भी अपनी लीला दिखाने में समर्थ हैं । अरे ! स्पष्ट ध्येय और दृढ़ निश्चयवालों ने तो पत्थर में भी भगवान प्रकट करके दिखा दिया था ।

एक समय की बात है ।

वे भक्तों से बोले : "आप लोगों ने मुझे तो कई बार खिलाया, आज मेरे नारायण को खिलाओ ।"

भक्तों ने स्नानादि से शुद्ध, पवित्र हो बड़े ही भाव और प्रेम से भोजन बनाया और बद्रीविशाल को भोग लगाया गया । वैसे तो पुजारी लोग रोजाना भोग धरते और ले आते थे । किन्तु, इनका तो स्पष्ट ध्येय था कि जब तक नारायण नहीं खायेंगे तब तक वे भी अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे । कुछ समय के पश्चात् जैसे कोई बड़ा आदमी थाल में से कुछ सामग्री उठाता है और बाकी का छोड़ देता है, भोजन के थाल में ऐसे चिन्ह मिले । नारायण स्वामी को संतोष हुआ । भगवान ने अर्चना अवतार के रूप में प्रकट होकर प्रसाद ग्रहण किया ।

जिनकी अर्चना-पूजा करते हैं उनमें अगर तुम्हारी दृढ़ श्रद्धा और संकल्प है तो भगवान वहाँ भी अपनी लीला दिखाने में समर्थ हैं । अरे ! स्पष्ट ध्येय और दृढ़ निश्चयवालों ने तो पत्थर में भी भगवान प्रकट करके दिखा दिया था । जिनका ध्येय स्पष्ट नहीं है वे तो माता-पिता में भी भगवान को नहीं देखते । जिनमें भगवान प्रकट हुए हैं ऐसे संत में भी भगवान नहीं देख पाते । जितना ध्येय स्पष्ट है, जितनी वृत्ति दृढ़ है, जितना चित्त तत्पर है उतना ही तुम्हारा संकल्प जड़-चेतन में व्यापक चैतन्य को प्रकट करने में सक्षम हो जाता है ।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना ।
प्रेम ते प्रकट होई मैं जाना ।।

भगवान प्रेम से प्रकट होते हैं ।

तो महाराज ! आप मंदिर के भगवान को प्रकट न करो तो न सही, इधर उधर किसी अवतार न लाओ तो न सही । लेकिन उस अंतर्यामी परमात्मा के दिव्य अवतार को अपने हृदयरूपी गुहा में अवतरित करने के अवश्य प्रयास करो । इसके लिए आपको अपने अंतःकरण की शुद्धि करना आवश्यक है । मोह में पड़े हुए, लालच में फँसे हुए, विकारों में उलझे हुए लोग अगर अपनी बुरी आदतें छोड़ने के लिए उत्सुक हों और एकदम छलांग न मार सकें तो छोटे-छोटे संकल्प ही ले लें कि उतने समय तक विकारों में नहीं उलझेंगे, इतने दिनों तक बुरी आदतें छोड़ देंगे । फिर इसका दृढ़तापूर्वक पालन करें । इससे आपकी हिम्मत बढ़ जायेगी । शक्ति बढ़ जायेगी और आपको लगेगा कि ध्येय बिल्कुल स्पष्ट है । सदा रहनेवाला सुख ही आपकी आवश्यकता है । नश्वर सुख नहीं चाहिए । इस बात को ज़ोर जोर से दोहराओ कि मेरा जीवन इस प्रकार का होना चाहिए और ऐसा नहीं होना चाहिए । हे भगवान ! यह होने में तू बल दे और यह न होने में मुझे सहायता करना । वह अंतर्यामी तुम्हें ठीक-ठीक प्रेरणा देगा । हो सकता है कि एक बार फिसलो, दो बार फिसलो, पाँच और पच्चीस बार फिसलो लेकिल जो गिरता है, फिसलता है और फिर भी पुरुषार्थ चालू रखता है तो देर-सबेर पहुँचता भी वही है ।

वृक्ष कभी गाली नहीं देता, चिड़िया कभी मुकदमा नहीं लड़ती और दिवार कभी चोरी-जारी नहीं करती । महाराज ! मनुष्य तो गाली भी देता है, चोरी भी करता है, मुकदमा भी लड़ता है और अन्य हल्के कुकर्म भी करता है लेकिन वही मनुष्य अगर स्पष्ट ध्येय बना लेता है तो परमात्मा होकर भी पूजा जाता है ।

वालिया लूटेरा वाल्मीकि ऋषि होकर पूजे गये । रोहीदास चमार संत रोहीदास होकर पूजे गये । धन्ना जाट भक्त धन्नाराज होकर पूजे गये ।

मानव में अद्भुत क्षमता है, शक्तियाँ हैं । अतः बुद्धिमानी इसीमें है कि शीघ्र ही संत, सद्गुरु और सत्शास्त्रों का आश्रय ग्रहण कर परमात्म-आनंद पाने की कला में पारंगत हो जायें ।

स्वामी रामतीर्थ का सन्देश

अमेरिका और युरोप के उन्नत कहलानेवाले सभ्यताभिमानी राष्ट्र केवल आत्महनन की दिशा में चल रहे हैं । उन्नति का अर्थ है आध्यात्मिक और मानसिक उन्नति । वास्तविक उन्नति तो मनुष्य की वास्तविक आत्मा पर प्रकाश डालती है । केवल उसकी छाया पर समय नष्ट करने से उसका काम नहीं चलता । उन्नति का सांसारिक सम्पत्ति अथवा अनावश्यक चीजों की वृद्धि से कोई सरोकार नहीं । प्राचीन आर्य लोगों ने बड़े महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं, शुद्ध, आडम्बर-शून्य स्वतंत्र जीवन व्यतीत किया है, संसार की किसी वस्तु पर अपना अधिकार जमाने में जीवन व्यतीत नहीं किया था जो पुनः इतिहास में उचित परिवर्तनों के साथ दुहराये जाने योग्य है ।

आधुनिक सभ्यता अपने मुख्य ध्येय से पथभ्रष्ट हो रही है । मनुष्य के बारे में ठीक उसी प्रकार बातें की जाती हैं. जैसे अनाज वा गेहूँ के सम्बन्ध में कि उनका मूल्य कितना बढ़ता है या घटता है । इस भावना से ऊपर उठो । कोई वस्तु तुम्हारा मूल्यांकन नहीं कर सकती ।

ऊपरी दिखावे के प्रिय भक्तों ! तुम्हें सोचना-समझना चाहिए कि तुम स्वयं कैसे भयानक स्वप्न के चक्कर में पड़े हो । जिसने प्रेमविभोर होकर त्याग का पाठ नहीं पढ़ा वह सभ्य कहलाने वाला मनुष्य है तो निरा असभ्य हीं, हाँ कुछ अधिक अनुभवपूर्ण, कुछ अधिक बुद्धि-सम्पन्न !

सभ्य संसार की लोलुपता, लोकाचार, कृत्रिमता और चमक-दमक पर मुग्ध मत बनो । ये सब बातें असफल, व्यर्थ सिद्ध हो चुकी हैं । इनकी अग्निपरीक्षा की गई, और ये काष्ट, शुष्क घास और चारे के समान निस्सार सिद्ध हुई । आधी जनसंख्या तो भूखों मर रही है और शेष आधी स्पष्ट अपव्यय- जैसे अनावश्यक सामान, सुगन्ध की बोतलों, व्यर्थ के आडम्बरी, उत्तेजक व्यवहारों, नाना प्रकार के बहुमूल्य तुच्छ पदार्थों, मलिन सम्पत्तियों और अस्वास्थ्यकर दिखावे के बोझ के तले दबी जाती है ।

न तो मानसिक परिश्रम और न शारीरिक परिश्रम स्वास्थ्य और दीर्घायु का विरोधी है । हाँ, विरोध होता है वहाँ जहाँ एक परिश्रम को दूसरे की अवहेलना पर स्थिर रखने की चेष्टा की जाती है । आजकल के संसार में कुछ मनुष्य तो शारीरिक श्रम पर ही जीवित हैं (नहीं, मर रहे हैं) और कुछ बौद्धिक चिन्तन के दुर्व्यसन (मानसिक श्रम) के दबाव से नष्ट हो रहे हैं । यह बँटवारा ऐसा है जैसे कि कुटुम्ब के कुछ लोगों में तो सूखी रोटियाँ और कुछ में मक्खन (या चटनी) बाँटा जा रहा हो ।

विश्व में आत्म-निन्दित हैं वे लोग जो किसी वस्तु पर अधिकार करना चाहते हैं । वास्तविक शूद्र हैं वे जो किसी वस्तु पर अपना दावा करते हैं । कालकोठरियों में रहने वाले आत्म-प्रताड़ित कैदी हैं वे जो किसी वस्तु के स्वामी बनते हैं । तुच्छातितुच्छ दया के पात्र हैं वे जो केवल धनसंचय करने में लगे रहते हैं । ऐसे आत्मघाती अपने आपको धन की गन्दगी में गले तक फँसाए हुए और उसके भार से दबे हुए आत्मघाती अपने आपको राजा अथवा सभापति के नाम से पुकारते हैं । कुछ अपने आपको घोर अंधकार में डुबोकर डाक्टर तथा दार्शनिक बनते हैं, कुछ शारीरिक और मानसिक दौर्बल्य के दलदल में फँसे हुए उसे 'शक्ति' समझते हैं, कुछ अपनी हास्यास्पद अवस्था में भीतर ही अपनी श्रेष्ठता का घमण्ड करते हैं । उन्होंने बलात् अपने को मृगजल में डाल दिया है, जिसका फल यह है कि तनाव, हाय बी.पी., उद्वेग, आतंक, अशांति के

'समता' आनन्द का एकमात्र नियम है । हिंसक लालच, छापा मार कर छीना-झपटी करने की पशु-प्रवृत्ति और पशु प्रवृत्ति से भी निकृष्ट अधिकार जमाने और धन संचय करने की लालसा ऐसे लोगों को हैरान, परेशान और चंचलचित्त बनाये रहती है ।

शिकार बने जा रहे हैं । एक शब्द में, ये लोग सब तरह से लाचार हैं और निखालस, सहज जीवन और सुख से वंचित आत्महनन की ओर जा रहे हैं, वे सफल दरिद्री हैं । सम्पत्ति और अधिकारों के भयानक स्वप्न में तड़प रहे हैं । बस, हमें इन सब आत्म-द्रोहियों, विचित्र तपस्वियों को जगाने और उनके उद्धार करने की आवश्यकता है ।

धन, विद्या, अधिकार और उपाधियों के घमण्ड और गौरव के भावों को चूर्ण कर दो । 'समता' आनन्द का एकमात्र नियम है । हिंसक लालच, छापा मार कर छीना-झपटी करने की पशु-प्रवृत्ति और पशु प्रवृत्ति से भी निकृष्ट अधिकार जमाने और धन संचय करने की लालसा । ऐसे लोगों को हैरान, परेशान और चंचलचित्त बनाये रहती है ।

मिथ्या दर्प और उच्चाकांक्षाओं के संघातक ज्वर को शान्त होने दीजिए । यह अटल सत्य प्रत्येक कर्णपुट में फूंक-फूंककर भर दो । इसे हृदयतल में प्रविष्ट कर दो कि तू जितना ही अधिक किसी वस्तु पर अधिकार जमाता है उतना ही अधिक स्वयं तुम पर उस वस्तु का अधिकार और आदेश जमता जाता है ।

ऐ सत्य के जिज्ञासु ! सभ्यता अथवा अपने समीपवर्ती संसार की रीतियों के दबाव से परेशान मत हो । तू तथाकथित उन्नत राष्ट्रों के बाह्य आडम्बर और चमक-दमक से क्यों भयभीत होता है ? उनकी उन्नति की मात्रा और आँकड़े तो इन्द्रियों का धोखा, कल्पना और जल्पना मात्र हैं । अधिकार जमाने के भाव को त्यागने और वेदान्त-विहित संन्यास के भाव को ग्रहण करने पर ही राष्ट्रों तथा व्यक्तियों की मुक्ति निर्भर है । इसके सिवा दूसरा मार्ग है नहीं । सबको देर सबेर इसी सत्य सिद्धांत पर आना ही पड़ेगा । तभी शाश्वत सुख और निश्चिंत जीवन का दर्शन होगा ।

यदि आप अपने आत्मस्वरूप को परमात्मा समझो और अनुभव करो तो आपके सब विचार व मनोरथ सफल होंगे, उसी क्षण पूर्ण होंगे ।

बच्चों के सोने के आठ ढंग

(१) कुछ बच्चे पीठ के बल सीधे सोते हैं । अपने दोनों हाथ ढीले छोड़कर चेहरे या पेट पर रख लेते हैं ।

यह सोने का सबसे अच्छा और आदर्श तरीका है । प्रायः इस प्रकार सोनेवाले बच्चे अच्छे स्वास्थ्य के स्वामी होते हैं । न कोई रोग और न कोई मानसिक चिन्ता । इन बच्चों का विकास अधिकतर रात्रि में ही होता है ।

(२) कुछ बच्चे सोते वक्त अपने दोनों हाथ उठाकर सिर पर रख लेते हैं । इस प्रकार शांति और आराम प्रदर्शित करनेवाला बच्चा अपने वातावरण से संतोष और शांति चाहता है । अतः बड़ा होने पर उसे किसी जिम्मेदारी का काम एकदम न सौंप दें क्योंकि ऐसे बच्चे प्रायः कमजोर संकल्पशक्तिवाले होते हैं । उन्हें बचपन से ही अपना काम स्वयं करने का अभ्यस्त बनायें ताकि धीरे-धीरे उनके अन्दर संकल्पशक्ति और आत्म-विश्वास पैदा हो जाय ।

(३) कुछ बच्चे पेट के बल लेटकर अपना मुँह तकिये पर इस प्रकार रख लेते हैं मानो तकिये को चुम्बन कर रहे हों । यह स्नेह का प्रतीक है । उनकी यह चेष्टा बताती है कि बच्चा स्नेह का भूखा है । वह प्यार चाहता है । उससे खूब प्यार करें, प्यार भरी बातों से उसका जी बहलाएँ । उसको प्यार की दौलत मिल गई तो उसकी इस प्रकार सोने की आदत अपने आप दूर हो जाएगी ।

(४) कुछ बच्चे तकिये से लिपटकर या तकिये को सिर के ऊपर रखकर सोते हैं । यह बताता है कि बच्चे के मस्तिष्क में कोई गहरा भय बैठा हुआ है । बड़े प्यार से यह छुपा हुआ भय जानने और उसे दूर करने का शीघ्रातिशीघ्र प्रयत्न करें ताकि बच्चे का उचित विकास हो । किसी सद्गुरु से प्रणव का मंत्र दिलाकर जाप करावें ताकि उसका भावि जीवन किसी भय से प्रभावित न हो ।

(५) कुछ बच्चे करवट हो दोनों पाँव मोड़कर सोते हैं । ऐसे बच्चे अपने बड़ों से सहानुभूति और सुरक्षा

के अभिलाषी होते हैं । स्वस्थ और शक्तिशाली बच्चे भी इस प्रकार सोते हैं । उन बच्चों को बड़ों से अधिक स्नेह और प्यार मिलना चाहिए ।

(६) कुछ बच्चे तकिये या बिस्तर की चादर में छुपकर सोते हैं । यह इस बात का संकेत है कि वे लज्जित हैं । अपने वातावरण से प्रसन्न नहीं हैं । घर में या बाहर उनके मित्रों के साथ कुछ ऐसी बातें हो रही हैं जिनसे वे संतुष्ट या प्रसन्न नहीं हैं । उनसे ऐसा कोई शारीरिक दोष, कुकर्म या कोई ऐसी छोटी-मोटी गलती हो गई है जिसके कारण वे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हैं । उनको उस ग्लानि से मुक्त कीजिए । उनको चारित्र्यवान और साहसी बनाइये ।

(७) कुछ बच्चे तकिया, चादर और बिस्तर तक रौंद डालते हैं । कैसी भी ठंडी या गर्मी हो, वे बड़ी कठिनाई से रजाई या चादर आदि ओढ़ना सहन करते हैं । वे एक जगह जमकर नहीं सोते, पूरे बिस्तर पर लोट-पोट होते हैं । पूरे बिस्तर को अखाड़ा बना देते हैं, मानो बिस्तर से कुस्तीबाजी करते हैं ।

ऐसे बच्चों को किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं होती । उनमें संकल्पशक्ति अधिक होती है । वे कुछ जिद्दी भी होते हैं । माता-पिता और अन्य लोगों पर अपना हुकुम चलाने का प्रयत्न करते हैं । ऐसे बच्चे दबाव से या जबरदस्ती कोई काम नहीं करेंगे । बहुत ही स्नेह से, युक्ति से उनका सुधार होना चाहिए ।

(८) कुछ बच्चे तकिये या चादर से अपना पूरा शरीर ढंककर सोते हैं । केवल एक हाथ बाहर निकालते है । यह इस बात का प्रतीक है कि बच्चा घर के ही किसी व्यक्ति या मित्र आदि से सख्त नाराज रहता है । वह किसी भीतरी दुविधा का शिकार है । ऐसे बच्चों का गहरा मन चाहता है कि कोई उनकी बातें और शिकायतें बैठकर सहानुभूति से सुने, उनकी चिन्ताओं का निराकरण करे ।

ऐसे बच्चों के गुस्से का भेद प्यार से मालूम कर लेना चाहिए, उनको समझा-बुझाकर उनकी रुष्टता दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए । अन्यथा ऐसे बच्चे आगे चलकर बहुत भावुक और क्रोधी हो जाते हैं, जरा-जरा-सी बात पर भड़क उठते हैं ।

वे बच्चे चबा-चबाकर भोजन करें ऐसा ध्यान रखना चाहिए । गुस्सा आवे तब हाथ की मुट्ठियाँ इस प्रकार भिंच देना चाहिए ताकि नाखूनों का बल हाथ की गद्दी पर पड़े ... ऐसा अभ्यास बच्चों में डालना चाहिए । 'ॐ शांतिः शांतिः ....' का पावन जप करके पानी में दृष्टि डालें और वह पानी उन्हें पिलायें । बच्चे स्वयं यह करें तो अच्छा है, नहीं तो आप ही करें ।

संसार के सभी बच्चे इन आठ तरीकों से सोते हैं । हर तरीका उनकी मानसिक स्थिति और आन्तरिक अवस्था प्रकट करता है । माता-पिता उनकी अवस्था को पहचानकर यथोचित उनका समाधान कर दें तो आगे चलकर ये ही बच्चे सफल जीवन बिता सकते हैं ।

❀

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों को

निवेदन

प्रायः सभी सदस्यों का १९९२-९३ के वर्ष का 'ऋषि प्रसाद' का सदस्य शुल्क इस अंक के साथ समाप्त हो रहा है । जिनका शुल्क समाप्त हो रहा है उन सदस्यों को नम्र निवेदन है कि वे अपने १९९३-९४ के वर्ष की सदस्यता अपने सेवाधारी साधक एजेन्ट भाई के द्वारा अथवा अहमदाबाद आश्रम के कार्यालय में केश/मनीऑर्डर/ड्राफ्ट से शुल्क जमा करवाकर रिन्यू करवा लेवें ।

शुल्क भरकर सदस्यता रिन्यू करवानेवाले पुराने सभ्यों को अपना स्थायी सदस्य क्रमांक अथवा पुराना रसीद नंबर एवं कौन-से महीने से अंक प्राप्त करना चाहते हैं यह लिखना अनिवार्य है ।

'पीड़ पराई जाने रे...'

ज्ञानी किसीसे प्यार करने के लिए बँधे हुए नहीं हैं और किसीको डाँटने में भी राजी नहीं हैं। हमारी जैसी योग्यता होती है, ऐसा उनका व्यवहार हमारे प्रति होता है।

लीलाशाह बापू के श्रीचरणों में बहुत लोग गये थे। एक लड़का भी गया था। वह मणिनगर में रहता था। शिवजी को जल चढ़ाने के पश्चात् ही वह जल पीता। वह लड़का खूब निष्ठा से ध्यान-भजन करता और सेवा पूजा करता।

शैशव और साधना

एक दिन कोई व्यक्ति रास्ते में बेहोश पड़ा हुआ था। शिवजी को जल चढ़ाने जाते समय उस बालक ने उसे देखा और अपनी पूजा-वूजा छोड़कर उस गरीब की सेवा में लग गया। बिहार का कोई युवक था। नौकरी की खोज में आया था। कालुपुर (अहमदाबाद) स्टेशन के प्लेटफार्म पर एक-दो दिन रहा। कुलियों ने मारपीट कर भगा दिया इसलिए चलते-चलते मणिनगर में पुनीत आश्रम की ओर जा रहा था। वहाँ रोटी मिलेगी इस आशा में जा रहा था। रोटी तो वहाँ नहीं मिलती थी इसलिए भूख के कारण चलते-चलते रास्ते में गिर गया और बेहोश हो गया।

उस लड़के का घर पुनीत आश्रम के पास ही था। सुबह के दस साढ़े दस बजे थे। वह लड़का घर से ध्यान-भजन से निपटकर मंदिर में शिवजी को जल चढ़ाने के लिए जल का लोटा और पूजा की सामग्री लेकर जा रहा था। उसने देखा कि रास्ते में कोई युवक पड़ा है। रास्ते चलते लोग बोलते थे कि : 'शराब पी होगी, यह होगा, वह होगा .... हमें क्या ?'

लड़के को दया आई। पुण्य किये हुए हों तो प्रेरणा भी अच्छी मिलती है। शुभ कर्मों से शुभ प्रेरणा मिलती है। अपने पास की पूजा की सामग्री एक ओर रखकर उसने उस व्यक्ति को हिलाया। बहुत मुश्किल से उसकी आँखें खुलीं, कोई उसे जूते सुंघाता, कोई कुछ करता, कोई कुछ बोलता था।

आँखें खोलते ही वह व्यक्ति धीरे से बोला : "पानी... पानी..."

लड़के ने महादेवजी के लिए लाया हुआ जल का लोटा उसे पिला दिया। फिर दौड़कर घर गया और अपने हिस्से का दूध लाकर उसे दिया। युवक के जी में जी आया।

उस युवक ने अपनी व्यथा बताते हुए कहा : "बाबुजी ! मैं बिहार से आया हूँ। मेरे बाप गुजर गये। काका दिन-रात टोकते रहते थे कि कमाओ नहीं तो खाओगे क्या ? नौकरी-धंधा मिलता नहीं है। भटकते-भटकते अहमदाबाद के स्टेशन पर कुली का काम करने का प्रयत्न किया। हमारी रोटी-रोजी छिन जायेगी ऐसा समझकर कुलियों ने खूब मारा। पैदल चलते-चलते मणिनगर स्टेशॅन की ओर आते-आते यहाँ तीन दिन की भूख और मार के कारण चक्कर आये और गिर गया।"

लड़के ने उसे खिलाया। अपना इकट्ठा किया हुआ जेबखर्च का पैसा दिया। उस युवक को जहाँ जाना था वहाँ भेजने की व्यवस्था की। इस लड़के के हृदय में आनंद की वृद्धि हुई। अंतर में आवाज आई :

"बेटा ! अब मैं तुझे जल्दी मिलूँगा... बहुत जल्दी मिलूँगा।"

लड़के ने प्रश्न किया : "अंदर कौन बोलता है ?"

तब उत्तर आया : "जिस शिव की तू पूजा करता है वह तेरा आत्मशिव। अब मैं तेरे हृदय में प्रकट होऊँगा। सेवा के अधिकारी की सेवा मुझ शिव की ही सेवा है।"

"जिस शिव की तू पूजा करता है वह तेरा आत्मशिव। अब मैं तेरे हृदय में प्रकट होऊँगा। सेवा के अधिकारी की सेवा मुझ शिव की ही सेवा है।"

उस दिन उस अंतर्यामी
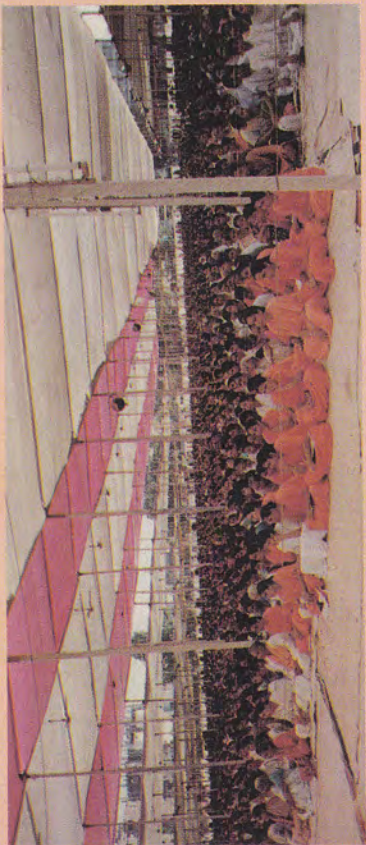
बड़ौदा में अभूतपूर्व सत्संग-वर्षा की झाँकी... पूज्यश्री का स्वागत करती हुई कलशयुक्त बालिकाएँ... गेरूए वस्त्रधारी साधिकाएँ... सज्जनों एवं सन्नारियाँ... पत्रकारों एवं साधु-संतों की विराट सभा की विभिन्न झाँकियाँ...

ने अनोखी प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया और वह लड़का तो निकल पड़ा घर छोड़कर...। ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए केदारनाथ, वृन्दावन होते हुए नैनिताल के अरण्य में पहुँचा ।

केदारनाथ के दर्शन पाये,
लक्षाधिपति आशिष पाये ।

इस आशीर्वाद को वापस कर ईश्वरप्राप्ति के लिए फिर पूजा की । उसके पास जो कुछ रूपये-पैसे थे, उन्हें वृंदावन में साधु-संतों एवं गरीबों में भण्डारा करके खर्च कर दिया था । थोड़े से पैसे लेकर नैनिताल के अरण्यों में पहुँचा । लोकलाड़ीले, लाखों हृदयों को हरिरस पिलाते पूज्यपाद सद्गुरु लीलाशाह बापू की राह देखते हुए चालीस दिन बिताये । गुरुवर लीलाशाह बापू को अब पूर्ण समर्पित शिष्य मिला... पूर्ण खजाना प्राप्त करने वाला पवित्रात्मा मिला । पूर्ण गुरु को पूर्ण शिष्य मिला ।

जिस लड़के के विषय में यह कथा पढ़ रहे हैं वह लड़का कौन होगा, जानते हो ?

पूर्ण गुरु कृपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।
आसुमल से हो गये, सांई आसाराम ।।

अब तो समझ ही गये होंगे । उस लड़के के वेश में छुपे हुए थे पूर्व जन्म के योगी और वर्तमान में विश्वविख्यात हमारे पूज्यपाद सद्गुरुदेव श्री आसारामजी महाराज ।

❀

भगवान के देश की मुद्रा

भारत, पाकिस्तान और सिलोन देश की मुद्रा 'रूपया' है । इंग्लैन्ड और इजिप्त देश की मुद्रा 'पाउन्ड' है । फ्रांस, बेल्जियम और स्वीट्झर्लेन्ड देश की मुद्रा 'फ्रेन्क' है । इरान, सउदी अरेबिया में 'रियाल' मुद्रा चलती है । उसी प्रकार अमेरिका, इथोपिया, कनाड़ा और ऑस्ट्रेलिया की मुद्रा 'डालर' है । इगड़, युगोस्लाविया में 'दीनार' चलती है, तुर्कस्तान और इटली में 'लीना' मुद्रा चलती है । रूस में 'रुबल', जापान में 'येन' का मुद्रा के रूप में प्रयोग होता है । डेनमार्क और स्वीडन में 'कोनर' चाहिए, जर्मनी में 'मार्क' चाहिए, बर्मा में 'कयात' चाहिए, अफघानिस्तान में 'अफघान' चाहिए, उसी तरह नेधरलेन्ड में 'गुल्हर' चाहिए ।

इस विश्व में अनेक प्रकार के देश, अनेक प्रकार के व्यक्ति, जाति, व्यवस्था और रीतिरीवाज हैं । सब जगह अलग अलग मुद्राएँ चलती हैं किन्तु श्रद्धा, प्रेम और सेवा द्वारा प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर को भज सकता है । उस परमात्मा के देश में न तो रूपया, पाउन्ड, फ्रेंक, रियाल, डॉलर, दीनार, लीना, रुबल आदि चलता है और न ही येन, कोनर, मार्क, कयात, अफघान या फिर गुल्हर । वहाँ तो भाव की मुद्रा ही चलती है ।

भगवान को आपका कुछ नहीं चाहिए, सिर्फ आपकी भाव रूपी मुद्रा ही दो, जिससे वे इस नश्वर मुद्रा से कभी भी न मिल सके ऐसी अमूल्य चीज़... शांति और आनंद देंगे ।

ऐसे सबके सुहृद, सर्वहितैषी, घट-घटवासी परमात्मा को रिझाओ, मनाओ । उनके प्यारे संतों की सेवा करके, अपनी सुषुप्त शक्तियों को जगाकर, सच्चा भाव विकसित करके जगत में अनंत सुख और आनंद के भागीदार बनो । अपने मनुष्य जीवन को सार्थक करो ।

भगवान के देश में जो मुद्रा चले वह है भाव । भगवान का देश सीमित नहीं पर असीम है । इस बात को जानो, अनुभव करो ।

– आश्रम के बालयोगी नारायण स्वामी

❀

सेवा-भावना की सुहास

सन् १८२० में कलकत्ता के पास एक गाँव में ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जन्म हुआ था । विद्या में इतने कुशल, बुद्धिमान थे कि उनका नाम विद्यासागर पड़ा ।

वे जब बालक थे तो अपने पिता के साथ टाँगे में बैठकर कलकत्ता जा रहे थे । उनका गाँव कलकत्ता से १९ मील दूरी पर था । रास्ते में माइल स्टोन देखकर उन्होंने पिता से पूछा :

''पिताजी ! यह पत्थर पर क्या लिखा है ?''

पिता ने कहा : ''यह अंग्रेजी में उन्नीस लिखा है ।''

बालक ईश्वर ने पूछा : ''अंग्रेजी में ऐसे उन्नीस लिखते हैं ?''

''हाँ !''

बस, फिर तो पक्का कर लिया । उन्नीस के बाद अठारह दिखे । आगे बढ़ते-बढ़ते सत्रह, सोलह...चार, तीन, दो, एक आदि दिखते गये । बुद्धिमान बालक ईश्वर ने टाँगे की सफर करते करते ही उन्हें पक्का कर लिया । कलकत्ता पहुँचा तब तक वह अंग्रेजी की पूरी गिनती सीखकर पक्की कर चुका था । ऐसा बुद्धिमान लड़का था वह ।

टाँगे की सफर करते करते कलकत्ता पहुँचा तब तक वह अँग्रेजी की पूरी गिनती सीखकर पक्की कर चुका था । ऐसा बुद्धिमान लड़का था वह ।

जैसे जैसे वह बड़ा होता गया, सत्संग का लाभ मिला होगा या अगले जन्म की साधना होगी, उसे पता लगता गया कि यह संसार की सब चीजें छोड़कर मर जाना है । इनका सदुपयोग करके अपनी आत्मा के समीप आना चाहिए । या तो सेवा के द्वारा इनका सदुपयोग करके अपने परमात्मा में आना है या फिर इनके लिए मजदूरी करके पच-पचकर मर जाना है । और फिर घोड़ा, गधा, बिल्ली और सूअर आदि बनकर जन्म-मृत्यु के चक्कर में पड़ना है ।

अभी हम मध्य में हैं, चेतन की अवस्था में हैं । इसका अति उपभोग करके अचेतन अवस्था में जायें अथवा सदुपयोग करके परम चेतन अवस्था में जायें यह हमारे हाथ की बात है ।

ईश्वरचन्द्र बहुत बुद्धिमान और तेजस्वी थे इसलिए पढ़ाई पूरी कर लेने पर उन्हें विद्यासागर के नाम से अलंकृत किया गया । युनिवर्सिटी में उनकी नियुक्ति हुई । वे छात्रों को तर्कशास्त्र पढ़ाते थे । परंतु वे इतने अक्लमंद, समझदार और साथ ही साथ निःस्पृह थे कि कुछ ही दिनों में उन्होंने युनिवर्सिटी के सत्ताधीशों से कहा :

''मुझसे ज्यादा अच्छे ढंग से तर्कशास्त्र तो पंडित श्रीमान वाचस्पति पढ़ा सकते हैं । मैं अपनी आय के स्वार्थ के कारण छात्रों की पढ़ाई में कमी क्यों आने दूँ ? मुझमें तर्कशास्त्र पढ़ाने की योग्यता है मगर मुझसे ज्यादा अच्छा पंडित वाचस्पति उन्हें पढ़ा सकते हैं ।''

सत्ताधीशों ने इनकी बात स्वीकार कर ली और ईश्वरचंद्र विद्यासागर खुद पंडित वाचस्पति के पास निमंत्रण लेकर गये । वाचस्पति इनके निमंत्रण को सुनकर चकित हो गये । वे बोले :

''इस पद के लिए तो पंडित लोग खींचातानी करते हैं । आपको यह सामने से मिला है और आप मेरे लिए सुझाव दे रहे हैं ? वास्तव में विद्यासागर ! आप मानव नहीं, अपितु देव हैं ।''

मानव अगर भोगों का उपयोग करता है तो मानव होता है । उसमें आसक्ति करता है तो दानव होता है और उसका त्याग करता है तो देव होता है ।

वाचस्पति ने पूछा :

''आपने यह पदवी कैसे त्याग दी ?''

''इसमें क्या बड़ी बात है ? जिसमें बहुजन का हित होता हो, उसीमें मेरा हित है । क्योंकि हम व्यापक समाज से जुड़े हैं ।'' विद्यासागर ने उत्तर दिया ।

आप समाज से अलग नहीं रह सकते । समाज के हित में आपका हित है । कुटुंब के हित में आपका हित है । पड़ोस के हित में आपका हित है । देश के हित में आपका हित है । विश्व के हित में आपका हित है । विश्व के विनाश में आपका भी अहित है, विनाश है । आप विश्व से जुड़े हैं । अगर आप शुभ वातावरण में बैठे हैं, चिंतन, भजन, ध्यान, करते हैं तो आपके शुभ भाव, शुभ श्वासोच्छ्वास इर्दगिर्द जाकर अच्छा वातावरण बनाते हैं । ऐसे ही हम अशुभ चिंतन करें तो वह भी वायुमंडल में फैलेगा । सब उसके श्वास लेंगे । कोई आदमी

मानव अगर भोगों का उपयोग करता है तो मानव होता है । उसमें आसक्ति करता है तो दानव होता है और उसका त्याग करता है तो देव होता है ।

अगर आप शुभ चिंतन, भजन, ध्यान करते हैं तो आपके शुभ भाव, शुभ श्वासोच्छ्वास इर्दगिर्द जाकर अच्छा वातावरण बनाते हैं । हम अशुभ चिंतन करें तो वह भी वायुमंडल में फैलेगा । सब उसके श्वास लेंगे । कोई आदमी अकेला नहीं है । वह पूरे विश्व से जुड़ा है ।

अकेला नहीं है । वह पूरे विश्व से जुड़ा है । सूर्य वहाँ ठंडा हो जाय तो हम यह कहने को नहीं रहेंगे कि सूर्य ठंडा हो गया ।

भले अभी यहाँ २' x २' की जगह पर बैठे हैं परंतु यह टुकड़ा पूरे गाँव से, गाँव शहर से, शहर राज्य से, राज्य देश से और देश विश्व से जुड़ा है । .... और विश्व विश्वेश्वर से अलग नहीं है । सचमुच, आपका भौतिक शरीर भी विश्वेश्वर के साथ जुड़ा है, मगर इसका पता नहीं । जड़ प्रक्रिया से देखो तो आपका जड़ शरीर भी विश्वेश्वर के साथ जुड़ा है । आपकी आँख मन से, मन बुद्धि से, बुद्धि चित्त से और चित्त चैतन्य से जुड़ी है । ऐसे चेतना से देखें तो भी आप परमात्मा से जुड़े हैं ।

दोनों तरफ से इतने जुड़े हैं फिर भी आप अपने आपको ईश्वर से, सुख से दूर क्यों पा रहे हैं ? क्योंकि राग, भय और क्रोध जारी है । यह क्यों होता है ? क्योंकि मिटनेवालों में अमर जैसा मोह है और अमिट का ज्ञान नहीं है ।

एक ही बीमारी है और एक ही दवा है । बीमारी यह है कि परिस्थिति और परिवर्तनों में आस्था एवं आसक्ति । दवा यह है कि परिवर्तन को परिवर्तन समझो और शाश्वत में प्रीति कर लो... 'मन्मया' हो जाओ ।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के पास एक लड़का आया और कहने लगा :

''बाबुजी ! अकाल का समय है । भीख माँगना मेरा स्वभाव नहीं फिर भी मैं माँग रहा हूँ । हो सके तो एक पैसा दे दो ।''

विद्यासागर तो सत्पुरुष थे । वे बोले : ''बेटा ! एक पैसा चाहिए ? अगर मैं तुझे दो पैसा दूँ तो तू क्या करेगा ?''

गरीब सच्चे लड़के ने कहा : ''एक पैसे के उबले हुए चने लेकर खाऊँगा और एक पैसा माँ को दूँगा ।''

विद्यासागर ने पूछा : ''अगर चार पैसे तुझे दूँ तो ?''

लड़का : ''दो पैसे के चने घर ले जाऊँगा और दो पैसे माँ को दूँगा ।''

विद्यासागर ने फिर पूछा : ''अगर मैं तुझे दो आने दे दूँ तो ?''

लड़के ने सिर नीचे कर दिया और चलता बना । विद्यासागर ने कलाई से पकड़ा और बोले :

''क्यों जाता है ?''

''आप एक पैसा तो देते नहीं, दो आने इस जमाने में कौन दे सकता है ? आप मेरी मजाक उड़ाते हैं ।''

विद्यासागर : ''नहीं, समझ ले मैं तुझे दो आने दूँ तो तू क्या करेगा ?''

लड़का : ''एक पैसे के चने अभी खाऊँगा, तीन पैसे के चने घर ले जाऊँगा और एक आना पूरा माँ को दूँगा।''

विद्यासागर फिर उस सच्चे लड़के को आजमाते हैं :

''अगर तुझे चार आने दूँगा तो क्या करेगा ?''

उस हिम्मतवान लड़के ने कहा : ''दो आने को जैसे आगे कहा वैसे ही उपयोग में लाऊँगा और बाकी के दो आने से आम आदि फल खरीदकर बेचूँगा और उससे अपना गुजारा चलाऊँगा ।''

विद्यासागर ने उसकी सच्चाई, समझदारी और स्वाश्रय को मन ही मन सराहते हुए उसे एक रूपया हाथों में थमा दिया । लड़का तो हैरान हो गया कि वास्तव में यह आदमी अद्भुत है ! क्या कोई फरिश्ता है जो स्वर्ग से मेरा भाग्य खोलने के लिए नीचे उतरा है ! लड़का रूपया लेकर उनका अभिवादन करता हुआ चलता भया ।

आप ईश्वर से, सुख से, अपनेको दूर क्यों पा रहे हैं ? क्योंकि राग, भय और क्रोध जारी है । यह क्यों होता है ? क्योंकि मिटनेवालों में अमर जैसा मोह है और अमिट का ज्ञान नहीं है ।

दो साल के बाद विद्यासागर कलकत्ते की बाजार से गुजर रहे थे तब एक युवक ने उन्हें रोका । हाथ जोड़कर, आजीनिजारी करते हुए कहने लगा : "कृपा करके मेरी दुकान पर पधारिये ।"

"मैं वह लड़का हूँ, जिसको आपने एक पैसा, दो पैसा, एक आना, दो आना, चार आना कहते हुए एक रूपया दिया था । यह आपके एक रूपये का रूपांतर है, आपकी कृपा का प्रसाद है ।"

"भाई ! मैं तो तुझे पहचानता भी नहीं और जिस दुकान की ओर तू इशारा कर रहा है, वह इतनी बड़ी दुकान किसकी है ?"

"आप चलो तो सही ! आप ही की है ।" लड़के की आवाज में नम्रता और कृतज्ञता थी ।

विद्यासागर दुकान पर गये ।

"आप बैठो, यह आप की ही दुकान है ।"

युवक की आँखें कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए छलछला रही थी ।

विद्यासागर : "भाई ! मैं तो तुझे जानता ही नहीं ।"

"मैं वह लड़का हूँ, जिसको आपने एक पैसा, दो पैसा, एक आना, दो आना, चार आना कहते हुए एक रूपया दिया था । यह आपके एक रूपये का रूपांतर है, आपकी कृपा का प्रसाद है ।"

लड़का अब विद्यासागर के चरणों पर गिर पड़ा ।

विद्यासागर के चित्त में उस समय तो अनहद आनंद आया, शांति मिली और अब उनकी प्रसिद्धि यहाँ सत्संग में आप लोगों तक पहुँची । अगर वे उस रूपये को अपने मोह और स्वार्थ में उड़ा देते तो क्या मिलता ?

तप करे पाताल में, प्रकट होय आकाश ।

रूपयों में, वस्तुओं में एवं भोग में जहाँ भी आपका स्वत्व है, आपकी मालिकी है वह अगर आप परहित के लिए खर्च कर देते हैं तो आपकी कीर्ति स्थायी हो जाती है। धोखा-धड़ी, फरेब से किसीकी कीर्ति होती दिखती हो तो वह अस्थायी है । कोई अगर अपने सही पसीने की कमाई से भोग न भोगकर सदुपयोग में खर्चता है तो उसका यश स्थायी हो जायेगा ।

विद्यासागर सीधे-सादे कपड़े पहनते थे । अपने शरीर के लिए ज्यादा खर्च नहीं करते थे । कुलपति के पद तक पहुँचे थे मगर इसके कारण खान-पान, पहेरवेश में आडंबर, दिखावा नहीं आया था । वे सादा और पवित्र जीवन जीते थे ।

एक बार वे रास्ते से गुजर रहे थे । सामने से एक ब्राह्मण आँसू बहाता हुआ मिला । परदुःखकातरता तो उनके स्वभाव में कूट-कूटकर भरी थी । रास्ते में गुजरते हुए भी खोजा करते थे, कोई सेवा का मौका मिल जाय । कोई रोड़ा, पत्थर बीच रास्ते में पड़ा हो तो उसे किनारे लगा देते थे । कोई रोता, बिलखता हुआ दिखता तो उससे सहानुभूति से बात करते ।

किसीका मार्गदर्शन करते समय उसे जो आनंद मिलता है, दुःखनिवृत्ति होती है उससे ज्यादा मार्गदर्शक को और सहानुभूति करने वाले को अपने ही दिल में आनन्द का अनुभव होने लगता है । सामनेवाला तो आपके बताये हुए रास्ते पर चले तब उसे फायदा होता है मगर आपने सहानुभूति से रास्ता बताया तो आपके हृदय में उसी समय फायदा महसूस होने लगता है । भय, राग और क्रोध कम होने लगते हैं ।

ईश्वर को पाने के लिए कोई मजदूरी नहीं करनी पड़ती, सिर्फ कला समझनी पड़ती है । मुक्ति के लिए कोई ज्यादा मेहनत नहीं है । नश्वर का सदुपयोग और शाश्वत में प्रीति, ये दो ही छोटे-से काम हैं ।

ईश्वर को पाने के लिए कोई मजदूरी नहीं करनी पड़ती, सिर्फ कला समझनी पड़ती है । मुक्ति के लिए कोई ज्यादा मेहनत नहीं है । नश्वर का सदुपयोग और शाश्वत में प्रीति, ये दो ही छोटे-से काम हैं ।

मिनिस्टर होना, प्राइम मिनिस्टर होना आप सब केबस की बात नहीं और फिर ये बड़े-बड़े काम का नतीजा बिल्कुल छोटा है । जबकि उपर्युक्त छोटे काम का नतीजा

एकदम बड़ा है ।

विद्यासागर ने उस ब्राह्मण को थाम लिया : "क्या बात है ? तुम्हारी आँखों से आँसू गिरते हैं ? बताओ ।"

दुःखी ब्राह्मण : "अरे मजदूर ! तू क्या मेरा दुःख दूर करेगा ?"

विद्यासागर बिनती करने लगे : "फिर भी भैया ! बताओ न ! मेरी जिज्ञासा है ।"

"मैंने लड़की की शादी में देखा-देखी ज्यादा खर्च कर दिया क्योंकि ज्ञाति में ऐसा रिवाज है । खर्च के लिए कर्जा लिया । जिससे कर्जा लिया उस महाजन ने मेरे पर दावा कर दिया । हमारी सात पीढ़ियों में, पूरे खानदान में हम कभी कोर्ट-कचहरी नहीं गये । अब मैं ऐसा बेटा पैदा हुआ कि मेरे बाप, दादा, नाना आदि का नाक कट जायगा । मैं कोर्ट में जाकर खड़ा रहूँगा वह कैसा लगेगा ? कितनी शर्मनाक घटना होगी वह ?" ऐसा कहकर वह सिसक-सिसककर रोने लगा ।

"अच्छा, महाजन का नाम क्या है ?" विद्यासागर ने पूछा ।

"आप नाम जानकर क्या करोगे ? मेरा दुःख, मेरा भाग्य, मैं फोड़ूँगा, आप अपने काम में लगो ।"

ब्राह्मण मुलाकात निपटाना चाह रहा था ।

"कृपा करके बताओ तो सही ।"

विद्यासागर ऐसा नहीं कह रहे हैं कि, 'मैं कर्जा चुकाऊँगा, मैं ठीक कर दूँगा, मैं विद्यासागर हूँ ।'

विद्यासागर ने आजीजी करके महाजन का नाम और कोर्ट के मुकदमे की तारीख पूछ ली । जिस दिन ब्राह्मण कोर्ट जाने को था उससे पहले ही उसे घर बैठे ही पता लग गया कि उसका केस खारिज हो गया है । क्यों ? क्योंकि महाजन को रूपये मिल गये । किसने दिये ? कोई पता नहीं । आखिर उसने पता लगाया कि परदुःखकातर, परदुःखभंजन विद्यासागर मुझे सड़क पर मिले थे । उन्होंने पैसे भर दिये और मुझे दुःख से मुक्त किया ।

उस ब्राह्मण को चित्त में अगाध शांति और सुख मिला मगर उस वक्त मिला जब उसे कर्जमुक्ति का पता चला । जबकि विद्यासागर को उससे कई गुनी शांति और आनंद उसी वक्त मिला जब उन्होंने उस ब्राह्मण का हित किया ।

एक दिन विद्यासागर किसी स्टेशन पर उतरे । उन्हें शहर में जाना था । इतने में वहाँ का एक डॉक्टर 'ऐ मजदूर ... ऐ मजदूर ...' करते हुए मजदूर के लिए चिल्ला रहा था । अब छोटे-से स्टेशन पर मजदूर कहाँ ? विद्यासागर धीरे से, गंभीर चाल से आ रहे थे । उनके कपड़े सीधे-सादे थे ।

डॉक्टर ने उन्हें बड़े जोरों से डाँटा : "क्या तुम मजदूर लोग बड़े आलसी हो गये हो ? इधर आओ, उठाओ... यह बेग उठाओ ।"

विद्यासागर सिर पर बैग उठाकर पैदल चलकर उसके घर पहुँचे ।

वह अकड़ू डॉक्टर घर में जाकर पैसे ले आया और इन्हें देने लगा :

"कितनी मजदूरी हुई ?" डॉक्टर ने पूछा । इतने में डॉक्टर के बड़े भाई ने खिड़की से देखा कि विद्यासागर आज हमारे प्रांगण में खड़े हैं ! वह तो झटपट बाहर आकर आदरपूर्वक पैर छूने लगा ।

तब डॉक्टर को पता चला कि जिनका नाम सुना था ... विद्यासागरजी, वे ही हैं ये । अरे !

इतने में करुणापूर्ण हृदय से विद्यासागर बोले :

"मैं मजदूरी यही चाहता हूँ कि मेरे भारतवासी अहंकाररहित

उस ब्राह्मण को चित्त में अगाध शांति और सुख मिला मगर उस वक्त मिला जब उसे कर्जमुक्ति का पता चला । जबकि विद्यासागर को उससे कई गुनी शांति और आनंद उसी वक्त मिला जब उन्होंने उस ब्राह्मण का हित किया ।

"मैं मजदूरी यही चाहता हूँ कि मेरे भारतवासी अहंकाररहित हों, स्वावलंबी हों । अपना काम आप ही करें और कर्त्तृत्व का अभिमान न रखें । यह मजदूरी मुझे दे दो ।"

हों, स्वावलंबी हों । अपना काम आप ही करें और कर्त्तृत्व का अभिमान न रखें । यह मजदूरी मुझे दे दो ।''

डॉक्टर तो फूट-फूटकर रोने लगा : ''मैंने आप जैसे को नहीं पहचाना और अपमान किया ।''

विद्यासागर ने कहा : ''तुमने अपने आपको ही नहीं पहचाना तो औरों की बात क्या ? अपने आपको ही पहचान लो, हम भी उसीकी शरण हैं ।''

पुरुष में, स्त्री में और पदार्थों में जो आकर्षण है वही हमें भय, शोक और जिम्मेदारी में डाल देता है । जिससे स्त्री, पुरुष और पदार्थ शोभायमान हो रहे हैं, उसके आकर्षण का पता नहीं इसलिए इन बाहरी आकर्षणों में हम हस्ताक्षर कर देते हैं । बाहरी आकर्षणों में जब हस्ताक्षर कर देते हैं तो 'मन्मया' नहीं हो पाते । 'मन्मया' नहीं हो पाते इसीसे सारे दुःख और पापों की शुरुआत हो जाती है ।

साधक ऐसा चाहिए, जा के ज्ञान विवेक ।
बाहर मिलता सों मिले अंदर सब सों एक ॥

साधक बाहर मिलने-जुलने में सबसे ठीक तरह मिले, मगर अंदर में समझे कि यह सब सपना है । यह सब आने जानेवाली परिस्थितियाँ हैं । मेरा मिलनेवाला तो मेरा कृष्णतत्त्व, मेरा रामतत्त्व, मेरा गुरुतत्त्व, मेरा आत्मदेव है । ऐसा अगर सजगता से भान रहे तो भय, राग, क्रोध क्षीण होते जायेंगे ।

जितनी जितनी नश्वर वस्तुओं की आस्था मिटती जायेगी उतने उतने भय, राग, क्रोध दूर होते जायेंगे... उतना ही व्यक्ति 'मन्मया' होता जायेगा ।

विद्यासागर की नाँई सेवा करना अच्छा है, परंतु इसमें भी बाहर की वस्तुओं की कुछ न कुछ पराधीनता रहती है । धन की, सेवा लेनेवाले की और सेवा करने का निर्णय करनेवाली बुद्धि की पराधीनता तो बनी ही रहती है । पूर्ण सुख यहाँ भी नहीं मिलता । पूर्ण सुख तब मिलता है जब तत्त्व का बोध मिलता है । पूर्ण स्वतंत्रता तब मिलती है जब पूर्ण आत्मा का 'मैं' रूप में साक्षात्कार हो जाता है ।

गीताकार ने कहा है :

आरुरुक्षो मुनेर्योगं कर्मकारणमुच्यते ।

योग में आरूढ़ होना चाहो, संसार में सफल होना चाहो तो निष्काम कर्म करो । निष्काम कर्म करने से हृदय शुद्ध होगा । हृदय शुद्ध होने लगे तो फिर समय बचाकर ध्यानमग्न हो जाओ । ध्यान करते करते उसमें आगे बढ़ो फिर विवेक विचार को ले आओ और आत्म-साक्षात्कार करके मुक्त हो जाओ ।

सब मुसीबत, कलह, क्लेश का कारण क्या ? बाहर के जगत के व्यवहार को अपनी वासना की डोर से बाँध रखने का जो आग्रह है उसीसे सब दुःख, मुसीबतें उत्पन्न होती हैं ।

दुःख उत्पन्न न हो उसका ख्याल रखो । तुम्हारा मन सुख चाहता है । और सब कुछ करके तुम सुख ही पाना चाहते हो । परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का आग्रह है वह गहराई में सुख की इच्छा का रूपांतर है ।

अब क्या करना चाहिए ?

परिस्थिति को अनुकूल बनाने का आग्रह न रखें । फिर भी सुख की तो इच्छा है ही । और जब तक सुख नहीं मिला तब तक वह इच्छा मिटती नहीं ।

तो फिर क्या करें ?

'मन्मया' हो जाओ । सुख लेना हो तो अंदर में लो और नश्वर चीजों का उपयोग करना हो तो बाहर आ जाओ, तुम्हारे दोनों हाथों में लड्डू ।

बाहर के व्यवहार से कोई सुखी होना चाहे तो समझो कि वह तिनके के ढेर को जलाकर, उसमें कूदकर भाई साहब शीतलता पाना चाहते हैं । या फिर अग्नि जलती हो उसे पेट्रोल का फव्वारा मारकर बुझाना चाहते हैं ।

अतः बुद्धिमान वह है जो संसार की वस्तुओं का उपयोग भोगबुद्धि से नहीं अपितु निर्वाहबुद्धि से करे । संसार की वस्तुओं का कुछ हिस्सा बहुजनहिताय बहुजनसुखाय खर्च करे और कुछ समय आन्तरयात्रा के लिए भी अवश्य निकाले ।

साधना में हमारी अभिरुचि होनी चाहिये, साधना की तीव्र माँग होनी चाहिये ।

सुभाषित सौरभ

सुनो सुनाऊँ दिव्य जीवनी ...

(तर्ज : आओ बच्चों तुम्हें सुनाऊँ ... वन्दे मातरम् ...)

जय जय आसारामजी की ।
जय जय सद्गुरुदेव की ॥

सुनो सुनाऊँ दिव्य जीवनी न्यारे संत महान की ।
बापू आसारामजी की ... सद्गुरुदेव महान की ॥
जय जय ...

नवाब जिले में गाँव बेराणी सिन्धु तट पे जन्म लिया ।
सन इक्यालीस चैत मास की वद षष्ठी को धन्य किया ।
माँ मंगीबा पिता थाऊमल बाल आसुमल नाम दिया ।
तीन बहन का भाई बना और परिवार को प्रसन्न किया ।
मान प्रतिष्ठा मन की शान्ति पाई लक्ष्मी कुबेर की ॥
जय जय ...

बोले कुलगुरु परशुरामजी लक्षण सभी विलक्षण हैं ।
दिव्य बालक में सारे लक्षण देखो उन संतों के हैं ।
पूर्व जन्म के ज्ञानी वैरागी योगी के सब लक्षण हैं ।
भाग्यवान हो आप समझ लो चार पदारथ पाये हैं ।
'लोगों का उद्धार करेगा' वाणी कुलगुरुदेव की ॥
जय जय ...

हुआ विभाजन भारत का जब सैंतालीस की साल में ।
छोड़ा पाकिस्तान सभी वे आये भारत अहमदाबाद में ।
मणिनगर में शिक्षा पाई सहनशील इस लाल ने ।
आशु युक्ति स्मरणशक्ति और नम्रता बाल में ।
माँ से सीखा यह आसुमल पूजा विधि ध्यान की ॥
जय जय ...

मात-पिता की सेवा कैसे करना सबको बतलाया ।
चले पिताजी जगत छोड़ तब काल कसौटी का आया ।
खोया वैभव और स्कूल की शिक्षा जब संकट आया ।
निमित्त कारण बड़े भाई थे सिद्धपुर बालक वह आया ।
करी नौकरी कृष्णचरण में बहाई धारा अश्रू की ॥
जय जय ...

सखा भाव से भक्ति करके प्रेम प्रभु का जब पाया ।
वाक् सिद्धि की शक्ति आई प्रभाव अपना बतलाया ।
'दो बेटे हैं पड़े जेल में' बुढ़िया ने पालव फैलाया ।
'दोनों जल्दी छूट जायेंगे' आसुमल ने फरमाया ।
बेटे घर आये माँ बोली जय हो आसु संत की ॥
जय जय ...

तीन साल के बाद ही आसु फिर से अहमदाबाद चले ।
दरिद्रता सब दूर हुई अब वैभव के बस बाग खिले ।
बड़े भाई का दिल भी बदला बुराई छोड़ वे बने भले ।
जबरन कर दी सगाई आसु की माँ ने तब वे भाग चले ।
खोज पकड़ लाये आसु को शादी कर दी विरक्त की ॥
जय जय ...

शादी तो की पर आसु ने पत्नी लक्ष्मी को यूं बतलाया ।
होगा ना व्यवहार संसारी जब तक साक्षात्कार ना पाया ।
जल में कमल रहे त्यों रहना आसु ने यूं समझाया ।
मैं हूँ अनश्वर और सच्चिदानंद आसु ने तब बतलाया ।
आसु को तो करनी थी बस प्राप्ति परमानन्द की ॥
जय जय ...

गति साधना की बढ़ती गई संस्कृत का अभ्यास किया ।
लक्ष्मीदेवी को समझाकर लक्ष्य काज घर छोड़ दिया ।
दर्शन कर केदारनाथ के वृन्दावन में वास किया ।
नैनिताल के अरण्य में स्वामी लीलाशाह को गुरु किया ।
श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ ने करी कसौटी संत की ॥
जय जय ...

सत्तर दिन तक हुई कसौटी आखिर गुरु ने बुलवाया ।
गृहस्थ होकर कर्म करो सब आदेश गुरु ने फरमाया ।
आज्ञा मानी घर पर आये और नर्मदा तट भाया ।
प्यार स्वामी का शीघ्र आसु को दत्तकुटीर में ले आया ।
चालीस दिन का किया अनुष्ठान लगी लगन भगवान की ॥
जय जय ...

काम क्रोधादि मरे शत्रु सब स्थितप्रज्ञता भी आई ।
द्वन्द्व धर्म भी मिटा दिया और सहज समाधि थी पाई ।
आधि व्याधि दूर हुई जब ब्रह्मनिष्ठता आ छाई ।
सहज समाधि लगी नदी तट तूफान आँधी भारी आई ।
डाकू समझकर शोर मचाया टूटी समाधि संत की ॥
जय जय ...

यथा भाव वैसी ही सूरत आसु ने सबको दिखलाई ।

माँ मंगीबा और पत्नी लक्ष्मीदेवी भी थी आई ।
दोनों रोई फूट-फूटकर और करुणता वहाँ छाई ।
छोड़ा जब वह गाँव तो रोये जार जार सब लोग लुगाई ।
किया प्रस्थाना मियांगाँव से गाड़ी अहमदाबाद की ॥
जय जय ...

लगी लगन थी गुरुमिलन की आसुमल बम्बई आये ।
देख शिष्य को गुरुवर लीलाशाह बहुत ही हर्षाये ।
ढ़ाई दिन मस्ती में रमते आसुमल ने बिताये ।
किया साक्षात्कार निज आत्मा का मिथ्या कुछ भी ना भाये।
आसौज सुद की दूज ही थी वह संवत बीस इक्कीस की॥
जय जय ...

रिद्धि सिद्धि सब आसुमल की दासी बनकर रहती थी ।
मुर्दा भी जिन्दा हो जाये यह निज संकल्प की सिद्धि थी ।
गुरुकृपा से आसुमल ने ज्ञान की पूंजी पाई थी ।
दिन दिन ब्राह्मीस्थिति संत की आगे बढ़ती जाती थी ।
सांई आसाराम बने अब जय हो आसाराम की ॥
जय जय ...

भिक्षा लेने जाते थे तब सत्संग सदा सुनाते थे ।
आता को' दुखियारा द्वार पे उसको शान्ति देते थे ।
माँस मद्य और व्यसन सभी के समझाकर छुड़वाते थे ।
गाँव गाँव में ज्ञान भक्ति की ज्योत जगाये जाते थे ।
डीसा से नारेश्वर आये ले ली राह एकान्त की ॥
जय जय ...

गये घोर जंगल में बैठे ध्यान निरंजन का धर के ।
भिक्षा लेने कहीं न जाना पक्का निश्चय यह करके ।
खिलाएगा खुद सृष्टिकर्त्ता यहीं प्रेम से आ करके ।
हुआ सिद्ध संकल्प खिलाया दो किसान ने ला करके ।
निराकार आधार हमारे निष्ठा आसाराम की ॥
जय जय ...

मोटेरा में पावन धाम बनाया है गुजरात में ।
भक्तियोग और ज्ञान की गंगा बहती है इस धाम में ।
साधिकाएँ करें साधना नारीआश्रम है सामने ।
नर-नारी या वृद्ध बाल सब शान्ति पाते धाम में ।
जैसी जिसकी रही योग्यता पाता आशिष संत की ॥
जय जय ...

गुरुशरण में आते हैं तो शोक मोह छुड़वाते हैं ।
ध्यान योग में ले जा करके ब्रह्मानन्द चखाते हैं ।
ॐ कार और रामनाम से रोग अनेक मिटाते हैं ।
योगक्षेम की कभी न चिन्ता सबको गुरु निभाते हैं ।
जिसने अमृतप्रसाद पाया चिन्ता गई त्रिताप की ॥
जय जय ...

पावन है यह जन्म दिवस हम सभी मनायें भाव से ।
जीवन में आदेश गुरु का अपनायें हम आज से ।
ब्रह्मा विष्णु महेश की मूरत गुरु में देखो भाव से ।
परब्रह्म हैं सद्गुरु प्यारे करो अनुभव प्यार से ।
युग युग जियो गुरु हमारे अर्ज प्रभो ! '**हरिदास**' की ॥
जय जय ...

❁

वसुधा पर इन्सान वही

धन वैभव पढ़ विद्या आदि का जिसको है अभिमान नहीं ॥
सत्य अनुपम शरणागत इस वसुधा पर इन्सान वही ॥ टेक ॥

सत्य धर्म फैलाने वाला
जन-मन सुखद बनाने वाला
विष पीकर मुस्काने वाला
अबला अनाथ उठाने वाला
प्यार स्नेह लुटाने वाला
परहित में मर जाने वाला

अपना और पराये का जिसके उर अन्दर है मान नहीं ॥
सत्य अनुपम शरणागत इस वसुधा पर इन्सान वही ॥

पर पीर को जो जानता
पर नारी को माँ मानता
निज कर्म को नित छानता
पर द्रव्य को पत्थर मानता
विषयों में मन नहीं सानता
सबमें प्रभु पहचानता

निज महानता स्तुति का जिस घट अन्दर है मान नहीं ॥
सत्य अनुपम शरणागत इस वसुधा पर इन्सान वही ॥

निज स्वार्थ से हो नि:सार
प्रभुभक्ति हो जिसका आधार
सद्भाव सद्गुण सत्य सार
कीर्ति प्रीति की शीतल बयार

सद्ज्ञान का दे जो उजियार
जग से मिटाये अंधकार
मन कर्म वचन से एक हृदय हर हालत में मुस्कान वही ॥
सत्य अनुपम शरणागत इस वसुधा पर इन्सान वही ॥
शान्ति मिलेगी महा मानव के
पदचिन्हों को अपनाकर
गंगा गीता गुरु चरणों में
नम्र निज माथा झुकाकर
हर्षित होगा फिर आर्यावर्त
विश्वगुरु पदवी पाकर
गीताज्ञान का कलरव करे '**कवि बाबूराम**' है महान वही ॥
सत्य अनुपम शरणागत इस वसुधा पर इन्सान वही ॥

प्रभुप्रेम का दीप जलाओ

प्रभु तेरे संसार में, भक्ति ही है सार ।
भक्ति बिना इस जीव का, नहीं होता उद्धार ॥
भक्ति कर लो राम से, फिर श्याम कहो या राम ।
जीवन के हर काम में, प्रभुजी का लो नाम ॥
पाप ताप घट जायेंगे, होते जाओ निष्काम ।
प्रभु के चरणों में सुख है, प्रभु के चरणों में आराम ॥
प्रभु में तुम लगन लगाओ, नित्य भक्ति से भाग्य जगाओ ।
भक्तिबल से दूर भागेंगे, माया काम विकार ॥
प्रभुप्रेम की बंसी बजाओ, प्रभुप्रेम का दीप जलाओ ।
त्याग भक्ति का लोभ बढ़ाओ, प्रभु हैं सबके तारणहार॥

- निरंजन कुमार 'निराकार'
रतलाम (म. प्र.)

गुरु स्वांस स्वांस में बोले ...

नित सोहं भज नर भोले, गुरु स्वांस-स्वांस में बोले ।।
गुरु हम तुम एक समाना, कहीं बाहर न ढूँढन जाना ।
घट भीतर हो तेरा ठिकाना, क्यों इधर-उधर तू डोले ।
नित् सोहं भज नर भोले, गुरु स्वांस-स्वांस में बोले ॥
पिया ढूँढ-ढूँढ मैं हारी, छानी है दुनिया सारी ।
घट भीतर ही कृष्ण मुरारि, क्यों बाहर नैना खोले ।
नित् सोहँ भज नर भोले, पिया स्वांस-स्वांस में बोले ॥
मन मंदिर को खूब सजाना, सतगुरु को बीच बिठाना ।
त्रिकुटी पे ध्यान लगाना, कोई आस पास न बोले ।
नित् सोहं भज नर भोले, गुरु स्वांस-स्वांस में बोले ॥
नित् सोहं-सोहं ध्याना, स्वांसों पे सुरत जमाना ।
नट से नटवर हो जाना, यह भेद गुरु ने खोले ।
नित् सोहं भज नर भोले, गुरु स्वांस-स्वांस में बोले ॥

कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा

कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा ।
सदा प्रेम के गीत गाता चला जा ।।
तेरे मार्ग में वीर ! कांटे बड़े हैं ।
लिये तीर हाथों में वैरी खड़े हैं ।।
बहादुर सबको मिटाता चला जा ।
कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा ।।
तू है आर्यवंशी ऋषिकुल का बालक ।
प्रतापी यशस्वी सदा दीनपालक ।।
तू सन्देश सुख का सुनाता चला जा ।
कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा ।।
भले आज तूफान उठकर के आयें ।
बला पर चली आ रही हों बलाएँ ।।
युवा वीर है दनदनाता चला जा ।
कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा ।।
जो बिछुड़े हुए हैं उन्हें तू मिला जा ।
जो सोये पड़े हैं उन्हें तू जगा जा ।।
तू आनंद डंका बजाता चला जा ।
कदम अपना आगे बढ़ाता चला जा ।।

आप यदि सत्य के मार्ग से हटेंगे नहीं तो शक्ति का प्रवाह आपके साथ है, समय आपके साथ है, क्षेत्र आपके साथ है । लोगों को उनके भूतकाल की महिमा पर फूलने दो, भविष्य काल की संपूर्ण महिमा आपके हाथ में है ।

आपके पत्र

भव्य हैं ऋषि और 'ऋषि प्रसाद' !

'ऋषि प्रसाद' हिन्दी द्विमासिक प्रगति पथ पर अग्रसर है । मुखपृष्ठ ही इसे पढ़ने को मजबूर कर देता है । इसे पढ़ने के बाद कोई और पत्रिका पढ़ने की जरूरत नहीं रहती । संत-जीवनी का संकेतमय चित्रों द्वारा प्रयास सर्वोत्तम है । वास्तव में 'ऋषि प्रसाद' बेहद प्रशंसनीय रहा ।

जुबाँ पे जिक्र तेरा उम्र ख्वाह दीदकतर ।
यही वजू है इसीको नमाज़ कहते हैं ॥

बस जुबान पर तेरी याद रहे, आँखों में एक ही अभीप्सा रहे कि तुझे देखना है । जुबान आँखों को याद दिलाती रहे कि देखना है, आँखें जुबान को याद दिलाती रहे कि उसका गुणगान जारी रहे । यही प्रार्थना है । यही आराधना है । यही नमाज है ।

सद्गुरु की उपस्थिति अपूर्व है और उनकी आँखें अद्भुत । मैं अपलक उनकी आँखों को निहारता रहा । मुझे तत्क्षण पता चला कि इस संसार में अत्यधिक शक्तिशाली सद्गुरु हैं । शब्दों में विश्वसनीयता और वाणी में आश्वासन । प्रवचन सुनते हुए मेरा उनसे इतना तादात्म्य हो गया था कि मुझे लगा, वे जो बोल रहे हैं वह मेरे लिए ही बोल रहे हैं । वे एक ऐसी शक्ति हैं जिन्होंने विश्व का चिंतन ही बदल दिया है ।

– सुरेन्द्रकुमार जोशी,
सैलाना, मध्य प्रदेश ।

❀

'ऋषि प्रसाद' पर भावाभिषेक

अधर्म से धर्म की ओर, अश्रद्धा से श्रद्धा की ओर, पाप से पुण्य की ओर, दुर्गति से सद्गति की ओर ले जानेवाली 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका, प्राचीन भारतीय ऋषि परंपरा की अद्भुत देन है । गिरते हुए मानव समाज के लिए उत्थान की ओर, अवनति से प्रगति की ओर ले जाने वाली यह पत्रिका कर्णावती से कर्ण के महाभारतकालीन दान की महिमा का स्मरण कराती है । इस पत्रिका की प्रशंसा करने में लेखनी भी अवरुद्ध होती है । **ऐसी पत्रिका सर्चलाइट से ढूँढने पर भी दूसरी नहीं मिलेगी ।**

'ऋषि प्रसाद' की भाषा-शैली अत्यंत रोचक, हृदयस्पर्शी और सरल है । इसमें न पांडित्य का दर्प है और न भाषा की अगम्यता । बल्कि इसमें अंतःकरण की मलिनता नष्ट करनेवाली आत्मस्पर्शी वाणी है। इसमें हृदय को झकझोर देने वाली पापविमोचन शक्ति भरी है, जिसका प्रेरणास्रोत है, महामानव प्रातःस्मरणीय पूज्य गुरुवर श्री आसारामजी महाराज ।

आज जो लोग भारतीय धर्म, संस्कृति, दर्शन और सभ्यता की खिल्ली उड़ाते हैं, उनका भ्रम दूर करने में यह पत्रिका पूर्ण सक्षम है । इसका प्रत्येक अंक आत्मिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए बेमिसाल है । ऐसी दुर्लभ ज्योति को इस पत्रिका के माध्यम से गागर में सागर भरकर जन-जन तक पहुँचानेवाले ऐसे विश्ववंद्य संत एवं उनकी योग वेदान्त सेवा समिति को शत शत प्रणाम !

– धर्मरत्न डॉ. पुरुषोत्तमदास कानुगो
अधिकृत प्रतिनिधि, धर्मसंसद अधिवेशन, नई दिल्ली।
दिनांक : ९-९-९२. वरुड़, अमरावती ।

❀

'हरि ॐ गाते स्वयं प्रभु प्रगटे हैं...'

धन्य है साबरमती का किनारा ।
जहाँ श्री आसाराम बसते हैं ॥
धन्य है गुजरात की धरा ।
जहाँ श्री आसाराम प्रगटे हैं ॥
बहायी ज्ञान-गंगा विश्व में जिसने ।
हरि ॐ गाते स्वंय प्रभु प्रगटे हैं ॥

अहमदाबाद नगरी में साबरमती नदी के किनारे पर मनमयूर को पुलकित कर दे, पापों का प्रायश्चित्त करा दे और आत्मपंछी को आनंदविभोर कर दे ऐसा सुन्दर

इन्द्रपुरी जैसा आश्रम रचकर, ज्ञान की गंगा को बहाने वाले 'संत श्री आसारामजी महाराज' के नाम से कौन अनभिज्ञ है ?

इत्र के सौरभ का प्रचार जैसे नहीं होता ।
ऐसे ही संत की महिमा का पार नहीं होता ॥

पूज्यपाद बापू को सुनने एवं देखने की खूब तमन्ना थी और सौभाग्य से मेरा स्वप्न साकार भी हुआ । मैं मानो धन्य हो गया इन संतश्री के दर्शन से । अच्छे से अच्छे युवक को भी शरमा दे ऐसी गर्वीली चाल, मुखकमल पर प्रकाशित आध्यात्मिक तेज और सुगठित शरीर । संत को शोभित करें ऐसा हंसीय रंग (सफेद) वस्त्रों में दमकती हुई वंदनीय प्रतिभा ।

गुजरात की बहुरत्ना वसुन्धरा पर अवतरित इन संत ने देश के नाम में चार चाँद लगा दिये हैं । इन संतपुरुष की दिव्य वाणी में भूतकाल के परम संतों की झाँकी दिखती है । साथ ही साथ 'स्व' के अनुभव से परिपूर्ण पाथेय का भी उनके पास कोई पार नहीं है । उसे पाने और समझने के लिए हमारे पास भक्तिरस का होना अनिवार्य है ।

जहाँ रहते हैं वहाँ अयोध्या, वृंदावन, रणुजा और हरिद्वार का निर्माण हो जाता है । वे घंटों-घंटों तो क्या दिनों-दिनों तक ज्ञानगंगा बहाते-बहाते थकते ही नहीं हैं । जैसे-जैसे समय बीतता है वैसे-वैसे मानो अध्यात्मशक्ति और सत्संग का सागर अधिकाधिक उमड़ता जाता है ।

कठिन साधना का फल लोकहित के लिए उन्होंने मुक्त-हस्त से बाँटना शुरु किया है । भारत देश की संस्कृति को अखंडित रखने के लिए ऐसे संतों की जरूरत है । समाज और संस्कृति के निर्माण में संतों का जो योगदान है उसे नापना सरल नहीं है ।

सत्संग का प्रवाह उनके श्रीमुख से प्रवाहित होता है, उससे भी आगे बढ़कर देखें तो उनके मुखकमल से सुहावने मधुर मोती झरते हैं । जो उसे लूट ले उसे चोर नहीं, किन्तु भक्त और साधक कहा जाता है । ये मोती लूटने की इच्छा वाले लूट सकते हैं ।

'ऋषि प्रसाद' ने पूज्यपाद आसारामजी बापू के ज्ञानमृत को, शब्दों द्वारा जनता के समक्ष रखकर सुंदर सेवा की है । जो धनभागी मनुष्य इस भगीरथ कार्य में ऐसे अवतारी संत का सान्निध्य पाते हैं और सेवाकार्य में जीवन सफल करते हैं उन सभी को मेरा वंदन !

– नारायण के. राठोड़
पामोल, जिला मेहसाना, गुजरात ।

(पेज ४८ से जारी...)

भैरवी (जिला वलसाड़, गुजरात) में संत श्री आसारामजी आश्रम में शिवरात्रि के पावन पर्व के दिन जपयज्ञ का आयोजन हुआ था जिसमें सेंकड़ों साधकों ने सुबह के ५ बजे से रात्रि के ८ बजे तक जप साधना का लाभ लिया था ।

१८ फरवरी '९२ को सुखलिया ग्राम, इन्दौर में विडियो सत्संग केन्द्र शुरु हुआ था । दिनांक १९ फरवरी ९३ को विडियो केन्द्र की वर्षगाँठ के प्रसंग पर प्रभातफेरी, कन्याओं द्वारा कलश शोभायात्रा, योग से बीमारियों के इलाज के विषय में निदान केम्प और श्री आसारामायण का पाठ, विडियो सत्संग, विद्यार्थियों में कीर्तन, पाठ-कंठस्थ स्पर्धा और प्रसाद का आयोजन हुआ । आस-पास के गाँव हरदा, टिमरनी, टेमागाँव, हंडिया आदि स्थानों में भी स्थानीय साधकों द्वारा विडियो सत्संग का आयोजन किया जाता है ।

वृन्दावन आश्रम में पूज्यश्री का जन्म-महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया । प्रसाद-भण्डारे में पच्चीस आश्रमों के महंत एवं ५०-६० साधु-संतों ने भोजन प्रसाद पाया । शाम को दरिद्रनारायणों में मिठाई बाँटी गई ।

भावनगर में सिन्धुनगर एवं बुधेल में स्थित दोनों आश्रमों में पूज्यश्री के जन्म-महोत्सव के प्रसंग पर विभिन्न कार्यक्रम योजित हुए । दोनों आश्रमों में गुरुपूजन-अर्चन एवं सत्संग के कार्यक्रम रखे गये थे । प्रसाद-भण्डारे में करीब पाँच सौ साधकों ने प्रसाद पाया । बुधेल गाँव की स्कूल के ४०० बच्चों को प्रसाद बाँटा गया । दोनों आश्रमों से दो दिन के लिए प्रभातफेरी भी निकाली गई थी ।

भोजन-विवेक

एक थे चोबाजी । खाया-पिया खूब । पेट सूज गया । दम घूंटने लगा । मेरे पास आकर बोले :

" महाराजजी ! आप ध्यान योग जानते हैं, स्वास्थ्य का राज़ जानते हैं । मुझे भी कुछ बताओ । मेरा पेट फूला जा रहा है । साँस लेने में भी तकलीफ हो रही है । कोई इलाज बताओ ।"

मैंने पूछा : "आज क्या खाया है चोबाजी ?"

"आज गुजरात की गाड़ी आई थी । मूर्गे मिल गये मूर्गे ! मौज आ गई । लड्डू खाये, चावल-दाल खाया ।"

शरीर स्वास्थ्य

"और क्या खाया ?"

"मोहनथाल खाया ।"

"और... ?"

"खमण खाया खमण ।"

"और क्या क्या खाया ?"

"स्वामी जी ! रबड़ी खाई ।"

"आगे ?"

"आगे तो गुरुजी ! पेटीस और कचौड़ी चटनी के साथ खायी । उसके ऊपर मिल्करोझ पिया ।"

"बस ?"

"बस कैसे ? उसके बाद हरिमंदिर की प्रसादी खायी ।"

"उसमें क्या खाया ?"

"बाबाजी ! बहुत बढ़िया थी – दूध का हलवा, आलूबड़े, रसमलाई, केसरिया चावल, कढ़ी और हाजमाहजम खारेक भी खायी ।"

मैंने सोचा : इसका पेट है कि पिटोरा है ? माल तो उनका था लेकिन पेट तो अपना था ! कितना खाना, कैसे खाना, कहाँ खाना, कब खाना इसका विवेक होना चाहिए ।

आपकी आवश्यकता हो इससे दो ग्रास कम खाना चाहिए । चोबाजी को ऐसा बोलूं तो वे नाराज हो जायें । पहले से परेशान तो थे ही । जितने लम्बे थे उतने ही चौड़े, गोलमटोल । अपनी तोंद पर हाथ घुमाते जाते और हाँफते जाते । मैंने कहा :

"देखोजी, ऐसा करो । यह संत-कृपा चूर्ण है न ? गुड़ के साथ मिलाकर छोटी-छोटी दो गोलियां बनाकर पानी के साथ ले लो, आराम हो जायगा ।"

"महाराज ! आप कैसी बात करते हो ?"

"क्यों ?"

"पेट में दो गोलियाँ धरने की जगह होती तो दो लड्डू और न फिट कर देता ?"

❀

अन्न को पीना चाहिए और प्रवाही को खाना चाहिए । रोटी को पीना चाहिए और दूध को खाना चाहिए । कैसे ? खाद्य पदार्थ को ऐसा चबाओ कि वह बिल्कुल रसरूप प्रवाही बन जाय । अपनी जिह्वा का रस उसमें ओतप्रोत मिल जाय । भोजन रसीला बन जाएगा, स्वास्थ्य के लिए अमृतमय हो जाएगा ।

पेय पदार्थ को इतना धीरे-धीरे पियो कि मानो खाद्य पदार्थ खा रहे हो । पेय पदार्थ को जल्दी-जल्दी गले से नीचे नहीं उतार देना चाहिए । जिह्वा-रस उसमें मिलने देना चाहिए । इस प्रकार खाद्य पदार्थ को पियो और पेय पदार्थ को खाओ ।

जब बराबर भूख लगे तभी खाना चाहिए । पेट के दो हिस्सों में भोजन, एक हिस्से में पानी और एक हिस्सा वायु के लिए खाली छोड़ना चाहिए ।

❀

क्रोध का उपाय

भोजन चबा-चबाकर खाने से क्रोध दूर होता है। क्रोध ऐसा दुष्ट राक्षस है कि वह सारे पुण्य खत्म कर देता है । घर में चोरी हो

"पेट में दो गोलियाँ धरने की जगह होती तो दो लड्डू और न फिट कर देता ?"

जाय तो भी कुछ न कुछ बच जाता है, आँधी–तूफान चले फिर भी कुछ बच जाता है लेकिन घर को आग लगे तो सब कुछ स्वाहा हो जाता है ।

भोजन चबा–चबाकर करने से क्रोध दूर होता है । क्रोध ऐसा दुष्ट राक्षस है कि वह सारे पुण्य खत्म कर देता है ।

ऐसे ही तुम्हारे दिल में मोह आ जाता है, तो भी कुछ पुण्यमयी सुखशान्ति बची रहती है । लोभ आ जाय तभी कुछ पुण्य बच जाते हैं, काम–विकार घुस जाय तभी भी कुछ न कुछ पुण्य बचा रहता है लेकिन जब क्रोध अन्तःकरण को घेर लेता है तब सब कुछ स्वाहा हो जाता है । दिल जलने लगता है, तन–बदन काँपने लगता है, हृदय का चैन–आराम गायब हो जाता है, बुद्धि के निर्णय में गड़बड़ी होने लगती है । आदमी परेशान हो जाता है । खुद क्रोध की आग में जलता है, औरों को भी जलाता है । क्रोध से अनिद्रा, अजीर्ण, हार्ट–अटैक, ब्लड़–प्रेशर आदि रोग भी होते हैं ।

क्रोध न करने की प्रतिज्ञा लेने से क्रोध नहीं जाता, शपथ लेने से क्रोध नहीं जाता, मनौतियाँ मानने से क्रोध नहीं जाता ।

कोई अगर वर्ष भर क्रोध न करे, सावधान रहे और आखिर में एक प्रहर के लिए भी क्रोध कर बैठे तो तपस्या का खाता–खराब हो जाता है । क्रोध का अनुभव तो सबको होता ही है ।

मैं तुम्हें ऐसी युक्ति बताने जा रहा हूँ कि तुम्हारी तपस्या का खजाना खाली न हो, क्रोध के आवेश से बच जाओ ।

जीवनदाता ईश्वर ने आपको भोजन चबाने की शक्ति दी है । आप अगर भोजन को ठीक से नहीं चबाते, शक्ति का उपयोग नहीं करते, जल्दी–जल्दी खा लेते हो तो वह शक्ति पड़ी रहती है । वह अचेतन मन में रहती है । आपके सामने कुछ प्रतिकूलता आती है तो अचेतन में पड़ी हुई वह शक्ति क्रोध के रूप में प्रकट होती है ।

जो आदमी चबा–चबाकर भोजन नहीं करता वह क्रोधी जरूर होगा । जो जल्दी–जल्दी खाता है वह जरूर क्रोध करता होगा ।

क्रोध को कैसे नियंत्रित करें ?

भोजन के समय सामने घड़ी रख दो । भोजन आधे घण्टे तक चबा–चबाकर करो । भोजन को पियो । इतना चबाओ कि भोजन प्रवाही बन जाय । भोजन को पियो और प्रवाही को खाओ । बीस दिन यह प्रयोग करके देखो, आपका ९५ प्रतिशत क्रोध नियंत्रण में आ जायगा । बाकी बचा हुआ ५ प्रतिशत क्रोध व्यवहार में फुफकारने के लिए बच जाय तो कोई चिन्ता की बात नहीं है ।

जब क्रोध का आवेश आ जाय तब क्या करें ?

आपने देखा होगा कि Electricity वाले जब लाइन का Connection देते हैं तब एक वायर Earthing का डाल देते हैं । करंट में कोई गड़बड़ होती है तो विद्युतप्रवाह Earthing के जरिए जमीन में उतर जाता है, बिजली से चलनेवाले साधनों को हानि नहीं पहुँचती । फ्यूज भी इसलिए डाला जाता है कि उपकरणों की सुरक्षा रहे । अन्यथा वे बार–बार जल जायँ ।

जीवनदाता ने भी आपके शरीर में क्रोध के मौके पर Earthing दिया है । आपने देखा होगा कि जब क्रोध आता है तब मुट्ठियाँ भिंच जाती हैं । हम उस प्रक्रिया को ठीक से जानते नहीं, रहस्य का पता नहीं इसलिए इसका उपयोग करके अधिक लाभ नहीं ले पाते ।

विद्युत के झटके से विद्युत की मोटर जल जाती है तो २००–५०० का नुकसान होगा लेकिन क्रोध की आग में दिल जला तो जीवन जल जाता है । मोटर न जले इसलिए लोग Earthing डालते हैं, फ्यूज डालते हैं लेकिन दिल रूपी मोटर का खयाल नहीं रखते । कितने चतुर हैं लोग !

जब क्रोध आवे तब जोर से हाथ की दोनों मुट्ठियाँ इस प्रकार कस के बाँध लेनी चाहिए जिससे ऊंगलियों के नाखून हथेली की गद्दी को अच्छी तरह दबाए । हथेली में जो नसें जाती हैं उन पर दबाव पड़ने से अच्छा परिणाम आता है, क्रोध शांत होने लगता है ।

घुटनों के जोड़ों के दर्द के लिए व्यायाम

घुटनों के दर्द में अत्यंत लाभ हो, उसके लिए व्यायाम की विधि इस प्रकार है । इस व्यायाम को प्रातःकाल खाली पेट करना चाहिए अथवा भोजन के तीन घण्टे के बाद करना चाहिए ।

❀ सर्व प्रथम पूर्व अथवा पश्चिम दिशा की ओर मुख करके खड़े रहें ।

❀ दोनों पैर अत्यंत पास भी न रखें और अत्यंत दूर भी न रखें ।

❀ अब दोनों पैरों के पंजों को उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर रखें ।

❀ हाथ ऊपर आकाश की ओर सीधे रखें ।

❀ इसी स्थिति में खड़े रहकर धीरे-धीरे बैठते जायें ।

अत्यंत दर्द होता हो फिर भी नीचे बैठना जितना संभव हो उतना बैठने का प्रयत्न जरूर करें । किन्तु एकदम नीचे न बैठ जायें । फिर धीरे-धीरे खड़े हों ।

इस प्रकार सात-आठ बार नीचे बैठने और फिर खड़े होने का प्रयत्न करें ।

घुटनों के दर्द के कारण जो लोग पद्मासन या सिद्धासन में निरंतर नहीं बैठ सकते उनके लिए यह व्यायाम लाभदायक है ।

जोड़ों के वात में जिसे अंग्रेजी में 'ऑस्टियो-आर्थराइटीस' कहते हैं उसमें यह कसरत लाभदायक है ।

जोड़ों के दर्द में मुख्य कारण मटर, चने और चने की दाल, तुअर की दाल जैसे कठोर और आलू की सब्जी, बासी भोजन मुख्य हैं ।

अत्यंत गीली, ठंडी जगह पर रहने से, ठंडी हवा लगने से जोड़ों का दर्द बढ़ता है ।

रेती का सेंक, गरम कपड़े का सेंक, हॉट वॉटरबेग का सेंक इसमें लाभप्रद है ।

सावधानी : जोड़ों के दर्द वाले मरीज को कभी भी किसी योग्य वैद्य की सलाह के बिना तेल की मालिश नहीं करनी-करवानी चाहिए । क्योंकि यदि जठराग्नि बिगड़ी हुई हो, कच्चा आम शरीर में किसी भाग में जमा हो ऐसी स्थिति में तेल की मालिश करने से हानि होती है ।

❀

यादशक्तिवर्धक भ्रामरी प्राणायाम

सर्वप्रथम सुखासन, पद्मासन या सिद्धासन में बैठें । उसके बाद दोनों हाथों की कुहनी का लेवल कन्धों तक रहे वैसे रखकर दोनों हाथ की प्रथम उंगली (तर्जनी) को दोनों कान में धीरे से डालें । एकदम जोर से दोनों कान बन्द नहीं करें किन्तु बाहर का सुनाई न दे उस प्रकार से धीरे से उंगली द्वारा कान बन्द करें ।

अब गहरा श्वास लेकर, थोड़ी देर रोककर, ओंठ बन्द रखकर धीरे-धीरे भौंरे का गुंजार हो इस प्रकार से 'ॐ ...' का गुंजन करें । उसके बाद थोड़ी देर श्वास न लें । अर्थात् बहिर्कुम्भक कर के फिर से इसी प्रकार ८ से १० बार करें ।

इस भ्रामरी प्राणायाम से स्मरणशक्ति में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा मस्तिष्क की नाड़ियों का शोधन होकर मस्तिष्क में रक्त-संचार उचित रीति से होता है ।

❀

ऊर्जायी प्राणायाम

प्राणायाम के अनेक प्रकार हैं । ६४ प्रकार के प्राणायाम पूज्य श्री लीलाशाह बापू जानते थे । उसमें से एक प्राणायाम ऊर्जायी प्राणायाम है ।

विधि : पद्मासन या सुखासन में बैठकर गुदा का संकोच करके मूलबंध करें । अब दोनों नथुनों को खुल्ले रखकर संभव हो सके उतने गहरे श्वास लेकर नाभि तक के प्रदेश को श्वास से भर दें । नथुनों, कंठ और छाती पर श्वास लेने का प्रभाव पड़े उस रीति से जल्दी जल्दी श्वास लें ।

एकाध मिनट कुंभक करके बाँये नथुने से श्वास धीरे-धीरे छोड़ें । यह तो सत्शिष्य को सद्गुरु बतायें वह विधि है । ऐसे दस ऊर्जायी प्राणायाम करने से पेट का शूल, वीर्य-विकार, स्वप्नदोष, प्रदर रोग (स्त्रियों

की पानी गिरने की बीमारी), लाखों रूपये खर्च करने से भी न मिटें ऐसे धातु संबंधी रोग मिटते हैं । इस ऊर्जायी प्राणायाम और 'योवन-सुरक्षा' (संत श्री आसारामजी आश्रम से प्रकाशित) पुस्तक में बताये गये खान-पान संबंधी नियमों के पालन से सहज में ही लाभ होता है ।

इस ऊर्जायी प्राणायाम और 'यौवन सुरक्षा' पुस्तक का लाभ चौदह वर्ष की उम्र से लेकर सत्तर वर्ष की उम्र तक के लोगों को निश्चित ही लेना चाहिए । प्राणायाम करने चाहिए । सुगठित शरीर, लंबी आयु, निर्णय शक्ति, तनावरहित जीवन और सुख-शांति का अनुभव कराने में ऊर्जायी प्राणायाम और 'यौवन-सुरक्षा' पुस्तक खूब सहाय करते हैं ।

❀

ब्रह्ममुद्रा

ब्रह्ममुद्रा योग की लुप्त हुई क्रियाओं में से एक महत्त्वपूर्ण मुद्रा है । ब्रह्मा के तीन मुख और दत्तात्रेय के स्वरूप को स्मरण करते हुए व्यक्ति तीन दिशा में सिर घुमाये ऐसी यह क्रिया है अतः इस क्रिया को ब्रह्ममुद्रा कहते हैं ।

विधि : वज्रासन या पद्मासन में कमर सीधी रखते हुए बैठें । हाथों को घुटनों पर रखें । कन्धों को ढीला रखें । अब गर्दन को सिर के साथ ऊपर-नीचे दस बार धीरे-धीरे करें । सिर को अधिक पीछे जाने देवें । गर्दन ऊपर-नीचे चलाते वक्त आँखें खुली रखें । श्वास चलने देवें । गर्दन को ऊपर-नीचे करते वक्त झटका न देवें । फिर गर्दन को धीरे-धीरे दाँयें-बायें १० बार चलाना चाहिए । गर्दन को चलाते वक्त ठौड़ी और कन्धा एक ही दिशा में लाने तक गर्दन को घुमायें । इस प्रकार गर्दन को १० बार दाँयें-बायें चलायें और अन्त में गर्दन को गोल घुमाना है । गर्दन को ढीला छोड़कर एक तरफ से धीरे-धीरे गोल घुमाते हुए १० चक्कर लगायें । आँखें खुली रखें । फिर दूसरे तरफ से गोल घुमायें । गर्दन से चक्कर धीरे-धीरे लगायें । कान को हो सके तो कन्धों से लगायें । इस प्रकार ब्रह्ममुद्रा का अभ्यास करें ।

लाभ : सिरदर्द, सर्दी-जुकाम आदि में लाभ होता है । ध्यान-साधना-सत्संग के समय नींद नहीं आयेगी । आँखों की कमजोरी दूर होती है । चक्कर बंद होते हैं । उल्टी-चक्कर, अनिद्रा और अतिनिद्रा आदि पर ब्रह्ममुद्रा का अचल प्रभाव पड़ता है । जिन लोगों को नींद में अधिक सपने आते हैं वे इस मुद्रा का अभ्यास करें तो सपने कम हो जाते हैं । ध्वनि-संवेदनशीलता कम होती है । मानसिक अवसाद (Depression) कम होता है । एकाग्रता बढ़ती है । गर्दन सीधी रखने में सहाय मिलती है ।

❀

वृद्धों के लिए विशेष शक्तिदायक प्रयोग

सुबह खाली पेट २५० ग्राम आम का रस, ५० ग्राम शहद और १० ग्राम अदरक का रस मिलाकर लें । उसके ऊपर एक गिलास दूध पियें । यह प्रयोग वृद्धों के लिए खूब बलप्रद और जीवनशक्ति बढ़ाने वाला तथा बुढ़ापे को दूर धकेलने वाला है । पुराने साधक जो इस प्रयोग से परिचित हैं और लाभान्वित हुए हैं उन्हें इस प्रयोग से दूसरों को भी लाभान्वित करना चाहिए ।

❀

हल्दी

हल्दी एक महत्त्वपूर्ण औषधि है । परंतु लोग उसका औषधि के रूप में पूरा-पूरा प्रयोग नहीं जानते हैं । प्राचीन काल से भोजन में और घरेलु उपचार के रूप में हल्दी का प्रयोग होता रहा है ।

हल्दी तीखी, कड़वी, रुक्ष, रूखी, गरम और शरीर के रंग को साफ करने वाली है । यह कफ, पित्त, त्वचा के दोष, प्रमेह, रक्तविकार, सूजन, पीलिया रोग, व्रण (घाव), कोढ़, कृमि, अपच आदि को मिटानेवाली है ।

हल्दी पाचनतंत्र, रस, रक्त आदि सब धातुओं और वात, पित्त और कफ ये तीनों दोषों पर प्रभावशाली है । उसमें से भी कइ धातु पर उसका अधिक प्रभाव

पड़ता है । हल्दी के उपयोग से कफ और पित्त की विकृति नष्ट होती है । हल्दी में दोषों को सुखाने का गुण है ।

हल्दी के टुकड़े को घी में सेककर रात्रि को सोते समय मुँह में रखने से कफ, सर्दी और खाँसी में फायदा होता है । कष्ट देती खाँसी भी उससे कम होती है ।

हल्दी को शहद में मिलाकर टान्सील्स के ऊपर लगाने से चाहे जैसे बढ़े हुए टान्सील्स बैठ जाते हैं ।

हल्दी और दारुहल्दी का उकाला (काढ़ा) शहद मिलाकर पीने से प्रमेह मिटता है ।

आँवले के रस में या उकाले में शहद और हल्दी डालकर पीने से पेशाब के मार्ग से जाता मवाद बंद हो जाता है ।

गाय के दूध की ताजी छाछ में (१०० ग्राम मट्ठे में) पाँच ग्राम हल्दी डालकर सुबह–शाम देने से पीलिया मिट जाता है ।

गाय के मूत्र में ३ से ५ ग्राम हल्दी मिलाकर पीने से कोढ़ मिटता है ।

हल्दी और शक्कर पानी में मिलाकर पिलाने से मूर्छा मिटती है ।

हल्दी की गाँठ को तुअर की दाल में बफा कर, छाया में सुखाकर, पानी में घिसकर सूर्यास्त से पूर्व दिन में दो बार आँख में आँजने से आँखों का लालपन मिटता है ।

हल्दी के धुँए की नास लेने से सर्दी और जुकाम तुरंत मिटते हैं ।

तुलसी

तुलसी दिव्य औषधि है । तुलसी पवित्र है । भगवान विष्णु को वह प्रिय है इसीलिए उसे 'विष्णुवल्लभा' या 'वैष्णवी' कहते हैं । उसे 'वृन्दा' भी कहते हैं । तुलसी से वातावरण शुद्ध रहता है । तुलसी सूक्ष्म जीवाणुओं और विषाणुओं को दूर करती है । अंग्रेजी में उसे Mosquito plant कहते हैं ।

जब मृत्युकाल समीप होता है तो मुख में तुलसी के पत्ते और गंगाजल रखने का रिवाज है । यह रिवाज (परंपरा) खूब वैज्ञानिक है । तुलसी हृदय के लिए हितकारी और बल देने वाली है और कफ को हरने वाली है । मृत्यु के समय अशक्ति के कारण कफ जम जाने से श्वास लेने में तकलीफ होती है, श्वास अटक जाती है या हृदय की माँसपेशी के कमजोर हो जाने से हृदय की धड़कनें बंद हो जाती हैं । इन दोनों में तुलसी फायदा करती है । तुलसी कई बार दर्दी को यमदूतों के पास से भी वापस खींच लाने की शक्ति रखती है । उसके अद्‌भुत गुणों के कारण वह पूजने योग्य है ।

तुलसी स्वाद में तीखी, कड़वी और कसैली होती है । वह गरम है । लघु अर्थात् पचने में हल्की है । वह जठराग्नि को बढ़ाती है । दुर्गन्ध का नाश करती है । कफ और वायु को जीतने वाली तथा कृमिनाशक है ।

तुलसी के पत्ते का रस १–१ चम्मच सुबह–शाम पीने से चाहे जैसा मलेरिया हो, मिट जाता है ।

तुलसी के सात पत्ते, नागरवेल का १ पत्ता और कालीमिर्च के ३ दाने चबायें । इस प्रयोग को सात दिन करने से बारंबार होता टान्सील्स, खाँसी और सर्दी मिटती है ।

१० तुलसी के पत्ते और एक चम्मच वायवडंग का काढ़ा बनाकर पीने से कृमि मिटता है । कृमि के कारण रक्त में 'इओसीनोफील' के कण बढ़ते हैं । खाँसी, दमा हो तब तुलसी का रस उत्तम औषधि है ।

अल्सरेटीव कोलाइटीस (खुनी बवासीर) में तुलसी के बीज उपयोगी हैं । १० से २० ग्राम बीज कूटकर रात को मिट्टी के बर्तन में छः गुने पानी में भीगोये । सुबह उसमें जीरा और शक्कर मिलाकर उस पानी को पीने से लेट्रिन में गिरता खून बंद होता है । फीके दही के साथ तुलसी के बीज का चूर्ण लेने से भी लेट्रिन के साथ जाता रक्त बंद होता है ।

तुलसी के पत्ते चबाकर ऊपर से पानी पीने से केन्सर में फायदा होता है ।

सुबह खाली पेट १० ग्राम तुलसी का रस और २०० ग्राम फीका दही लेने से शरीर स्वास्थ्य में चमत्कारिक लाभ होता है ।

चमत्कारिक गुरुकृपा बरसी और मौत भी दबे पाँव भाग गई ...

हमारे शहर में एक नौजवान को पागल कुत्ते ने काट लिया । नौजवान ने इसे अनसुना करके सिर्फ प्राथमिक उपचार करवा लिया, परन्तु कुछ ही घण्टों के पश्चात् उस नौजवान के शरीर में पागल कुत्ते का जहर फैलना आरंभ हो गया । परिजनों ने उसे चिकित्सालय में दाखिल करवाया, उस समय उसकी हालत ऐसी थी कि उसकी स्थिति को देखकर कैसे भी मजबूत मनवाले आदमी के रोंगटे खड़े हो जायें ।

उस नौजवान का सारा शरीर काला पड़ता जा रहा था । आँखें ऐसी फाड़–फाड़कर देख रहा था, मानो खून उबल रहा हो । वह बूरी तरह से तड़प रहा था, कभी पलंग पर लौट लगाता तो कभी ऊँची–ऊँची उछलकूद मचाता । पाँच–छः हट्टेकट्टे शरीरवाले युवा भी उसे पकड़ नहीं पा रहे थे । उसकी हड्डियों में ऐसी आवाजें आती जैसे अंदर सभी का चुरा हो रहा हो । दाँतों के बीच जिह्वा फँस जाने से वह पूरा लहूलुहान हो चुका था । पलपल में तरह तरह की भयानक मुखाकृति बनाता। उसके शरीर में जहर फैलने से उसे इतनी बैचेनी हो रही थी कि उसने गादी और तकिये की सारी रूई को जार–जार करके पूरे वार्ड में फैला दी ।

चिकित्सकों का कहना था कि यदि इस नौजवान के नाखून भी किसी संभालने वाले को लग जायें तो उसे जहर चढ़ने में तनिक भी देर नहीं लगेगी । चिकित्सकों ने उसे नींद के कई इंजेक्शन भी दिये लेकिन वह काबू से बाहर हो चुका था । कोई भी उस नौजवान को पकड़ने तक को तैयार नहीं था । चिकित्सकों ने स्पष्ट कह दिया था कि अब यह अंतिम साँसें गिन रहा है, इसे घर ले जाया जाए ।

मुझे लगा कि अब जबकि सभी ने हाथ खड़े कर दिये हैं, और यह नौजवान भी मौत और जीवन के बीच लड़ रहा है, तो क्यों न मैं अपने पूजनीय गुरुदेव से इसके लिए 'जीवनदान' की याचना करूँ ? मेरे अपने अंतःकरण ने उसकी सहमति दी और मैं तुरन्त घर पर श्रद्धेय गुरुदेव के समक्ष बैठकर गुरुमंत्र का जप करने लगा । मैंने गुरुदेव से सच्चे हृदय से भावविभोर होकर प्रार्थना की :

"हे प्रभु ! मेरे गुरुदेव ! अब आपका ही आसरा है। सभी हार चुके हैं, लेकिन आपके आशीर्वाद से हार विजय में बदल सकती है । हमारे लिए यह कार्य असंभव है और आपके लिए असंभव कुछ भी नहीं । मेरे आसाराम भगवान ! दया करो ... आपकी अमृत–कृपा से उसे एक नया जीवन प्रदान हो सकता है ।" इस तरह मैंने काफी समय तक गद्गद् कंठ से पूज्यश्री से प्रार्थना की और फिर शांत होकर मैं बापू की तस्वीर को निहारने लगा । यकायक मुझे ऐसी अनुभूति हुई कि : "अब मौत भी उसका बाल तक बाँका नहीं कर सकती है ।"

सुबह जब मैं उस नौजवान के बारे में जानने गया तो पता चला कि डाक्टर भी खुद दंग रह गया था कि यह क्या चमत्कार हो गया ! जो रात्रि में मौत की प्रतीक्षा कर रहा था, उसने भला नया जीवन कहाँ से पा लिया ? अर्ध रात्रि के बाद मानो उसकी पीड़ा यकायक गायब हो गई । उसने ऐसी नींद ली जैसे त्रिलोकी का समूचा सुख उसे ही मिल रहा हो । युवान के मुख पर प्रातःकाल इतनी शान्ति

दाँतों के बीच जिह्वा फँस जाने से वह पूरा लहूलुहान हो चुका था । पलपल में तरह-तरह की भयानक मुखाकृति बनाता । उसके शरीर में जहर फैलने से उसे इतनी बैचेनी हो रही थी, कि उसने गादी और तकिये की सारी रूई को जार–जार करके पूरे वार्ड में फैला दी ।

नजर आ रही थी मानो कुछ हुआ ही नहीं हो ।

जिस रोग का इलाज सात समुन्दर पार भी संभव नहीं था, वह रोग पलंग पर लेटे–लेटे ही गायब हो गया । यह पूज्य बापू की करुणा का साक्षात् प्रमाण है। आज वह युवा स्वस्थ है ।

पूज्यश्री की असीम अनुकंपा का क्या बखान किया जाए ? पूज्य बापू पृथ्वी पर साक्षात् ब्रह्माजी हैं, जो देहधारियों में प्राण फूँकते हैं । पूज्य बापू के होते हुए हमें सांसारिक व्याधियों की क्या चिन्ता ?

श्रद्धेय गुरुवर की 'प्राण–प्रदायिनी' कृपा के लिए हम सभी आपके श्रीचरणों में शत शत वन्दन कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं ।

– नीलेश सोनी 'लोहित'
पत्रकार,
दैनिक प्रसारण, रतलाम (म.प्र.)

सुगर से छुटकारा

(दिनांक : २४–३–९३)

ॐ जय स्वामी सद्गुरुदेव की....

मैं महंत प्रयाग मुनि, सिन्धी कुटीया, वृन्दावन का रहने वाला हूँ । इस वक्त मेरी आयु ८४ वर्ष है । मैं यहाँ पर डाक्टर को आँख दिखाने गया था । उन्होंने कहा कि देखने में आया है कि पेशाब व खून में सुगर है । इसलिए इसकी टेस्ट कराओ, आपको कमजोरी बहुत है । इस कमजोरी की वजह से यहाँ का कोई भी, बड़े से बड़ा डाक्टर भी ऑपरेशन नहीं कर सकता । इसलिए आप पहले उसका टेस्ट कराओ ।

दूसरे दिन टेस्ट करवाने पर सचमुच सुगर निकली । तब डाक्टर ने कहा कि सुगर के कारण इसका इलाज बाहर, बड़े शहर में करना पड़ेगा । वृन्दावन में इसका डाक्टर नहीं है । सो मैंने पूना जाने की तैयारी कर ली । मैंने टिकट बुक करवाई जिसमें दस दिन का फासला था । दैवयोग से हमारे परम कृपालु सद्गुरुदेव जिनका नाम ही आसाराम है, सबकी आशाओं को आराम देने वाले हैं, उनको पता चला । उन महापुरुष ने सुगर की दवा भेजी तो मैंने वह दवा शुरु कर दी । १० दिन के बाद हम बम्बई गये और वहाँ की बड़ी अस्पतालों में दिखाया । उन्होंने अच्छी तरह से सारे शरीर का एक्स–रे किया, जाँच की । पर, वाह ! वाह ! स्वामी आसारामजी !! आपकी दवा खाने से हमको किसी भी अंग में सुगर नहीं मिली । आप तो अवतारी महापुरुष हैं । आपने हमको दवा भेजकर सर्व दुःखों से निवृत्त कर दिया, कहीं सुगर का नाम नहीं रहा । दवा का तो निमित्त होगा । दवा के साथ तो उन महापुरुष की दुआ ने काम किया । धन्यभागी हैं वे लोग जो इनके दर्शन, सेवा और सत्संग से अपना जीवन उन्नत करते हैं ।

– महन्त प्रयाग मुनि उदासीन
सिन्धी कुटीया, गांधीमार्ग, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश ।

'ग्यारह–ग्यारह को सब ठीक हो जायेगा ...'

मंत्रदीक्षा लेने से पूर्व दी गयी
ग्यारहवें महीने की ग्यारहवीं तारीख

इस संसार में सुख–दुःख का चक्र चलता ही रहता है । जब दुःख का चक्र चलता है तब दुःख के सागर में डूबता उतरता मनुष्य उससे निकलने का मार्ग ढूँढ़ता है । जब सारे प्रयत्न व्यर्थ होते दिखाई देते हैं तब उसका हृदय गहरी ग्लानि से भर जाता है ।

उस समय किसी संतपुरुष की अगम्य कृपा ही हृदय को शीतलता प्रदान करती है । ऐसे कठिन संसार में संत मरुस्थल के मधुर झरने जैसे लगते हैं ।

मेरे जीवन में एक ऐसा प्रसंग बन चुका है । मैंने मंत्रदीक्षा नहीं ली थी, फिर भी सत्संग, दर्शन का अनुपम लाभ मुझे मिला है । पू. बापू जब धामणवा आये तब वसई भी आये थे । उस समय मैंने पू. बापू की आरती उतारी थी ।

अहमदाबाद में जब बी. एड़. करती थी तब अपनी छोटी बहन को अनुष्ठान के लिए आश्रम में छोड़ने के लिए जाती थी । उस समय बापू के फव्वारे से तो भीग जाती किन्तु मन उतना नहीं भीग पाता था जितना कि भीगना

चाहिए था । इसलिए मैंने निश्चय किया कि जब तक मेरा मन नहीं भीगेगा तब तक मैं नामदान नहीं लूँगी ।

हम दोनों बहनों का एक सामाजिक प्रश्न था । इससे मैं रोज अपनी बहन से कहती कि तू यह प्रश्न बापू से क्यों नहीं करती ? तेरे तो वे गुरु हैं ।

एक रात्रि को मुझे स्वप्न आया । स्वप्न में बापू मेरे घर आये । मैं तो बापू को देखकर अत्यंत प्रसन्न हो गई । मुझे लगा कि आज तो छोटी बहन की बात कह दूँ । ऐसा सोचकर बात करने लगी । फिर मुझे ऐसा लगा कि हम दोनों का प्रश्न तो एक ही प्रकार का है । (दोनों की ससुराल एक ही घर में है) अतः मेरे दुःख की बात भी कह दूँ जिससे पू. बापू को सारी बात की जानकारी मिल जाये । अभी तो मैं अपनी बात कह ही रही थी कि इतने में मेरी पूरी बात सुने बिना ही पू. बापू कहने लगे :

"ग्यारह–ग्यारह को सब ठीक हो जायेगा ।"

मैंने अपना स्वप्न घर में सभी को कहा किन्तु सभी को वह स्वप्न दिन में की गई चिन्ता–विचारों का परिणाम लगा ।

उसके बाद बापू मेहसाना आये । सत्संग में मैं अपनी बेटी को लेकर पीछे बैठी थी । तब मैंने बापू से मन ही मन कहा :

"बापू ! अभी जिस नौकरी के लिए अरजी दी है वहाँ डोनेशन नहीं लिया जाता पर मेरिट देखा जाता है । यदि वहाँ नंबर लग जाये तो ही मैं अपको गुरु बनाऊँगी, नहीं तो नहीं बनाऊँगी ।"

थोड़े दिनों के बाद इन्टरव्यू कॉल आया । दिनांक : ११–११–९२ का कॉल देखकर घर के सभी कहने लगे :

"यह तो स्वप्न में दी हुई तारीख है !"

इन्टरव्यू में एक दिन पूर्वसूचि की पूछताछ कराई तो मुझसे मेरिट में एक बहन आगे थी, और वे अपने देश के पास आना चाहती थी । उसके बाद एक भाई एक नंबर से आगे थे । परन्तु सभी उम्मीदवारों में मेरी नियुक्ति हो गई । परिणाम का पता भी उसी दिन चल गया । तब बापू की असीम कृपा की, अन्तर्यामी गुरु की, सचराचर में व्याप्त मेरे परब्रह्म की, जगत–नियंता खुद विधाता की खबर मिली । शक्ति के पुंज ऐसे बापू ने स्वप्न में जो 'ग्यारह–ग्यारह को सब ठीक हो जायेगा' कहा था वह फलित हुआ ।

नौकरी के कारण सामाजिक दुःख थोड़ा हल्का हुआ । अब मुझे विश्वास है कि बहुत कुछ हो गया । बापू ने मुझे निश्चित तारीख, निश्चित महीना स्वप्न में बताया वह फलित हुआ । अंतर्यामी गुरुदेव के समक्ष कोई दुःख छिपा नहीं रहता इसकी प्रतीति हुई । मेरे जीवन में वह भाग्यशाली दिन आ गया :

'Happy Birthday to me ..... '

याने कि मंत्रदीक्षा का दिन । नामदान (मंत्रदीक्षा) की तारीख पच्चीस । मेरी उम्र भी पच्चीस वर्ष । वार गुरु को मुझे मिले सद्गुरु ।

मैंने मूर्ख ने 'नौकरी मिलेगी तो ही मंत्रदीक्षा लूँगी' ऐसा बापू को कहा, इस बात का अब पश्चात्ताप होता है । मुझसे इन भगवान को ऐसा क्यों कहा गया ? बापू ! मुझे क्षमा करना । आखिर तो हम आपके हठी, अवगुणी बालक ही हैं ।

बस, अब तो ऋषि के पुनीत चरणों में हमेशा रहें, उनके प्यारे बनकर रहें यही जीवन भर की आशा है । अब मेरे बापू के विषय में कृतज्ञता के आँसूओं के सिवाय कुछ लिखते नहीं बनता ।

बापू को मेरे लाख–लाख प्रणाम !

– कल्पना बहन

(एम. ए., बी. एड.)

यूनियन हाईस्कूल, लांघणज, जिला मेहसाना, गुजरात ।

अपनी कैसी भी वर्तमान अवस्था को सर्वोच्च मानने से ही आप के हृदय में आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान का अनायास उदय होने लगेगा । आत्म–साक्षात्कार को मीलों दूर की कोई चीज समझकर उसके पीछे दौड़ना नहीं है, चिन्तित होना नहीं है । चिन्ता की गठरी उठाकर व्यथित होने की जरूरत नहीं । जिस क्षण आप निश्चिंतता में गोता मारोगे उसी क्षण आपका निजस्वरूप प्रकट हो जायगा ।

सेलवास दादरानगरहवेली में प्रातःकाल में निकली हुई संकीर्तनयात्रा में महिला साधिकाओं का विशाल समूह... 'ऊतारूँ गुरुदेव की आनंद मंगल आरती...'
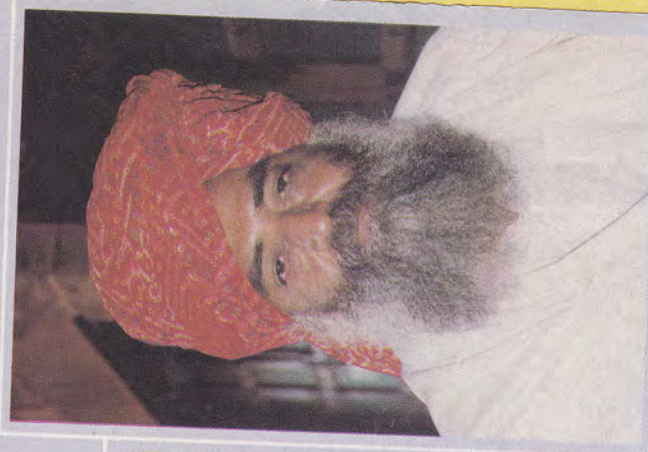
पंचेड़ (रतलाम) के भक्तों ने पूज्यश्री के जन्म-महोत्सव के प्रसंग पर स्टेज को शेषनाग के आकार में सजाया था। उसकी शोभा तो देखते ही बनती थी। कैमरा बेचारा कितना ग्रहण करके दिखा सकता है !

पू. बापू को जन्मदिन की बधाइयाँ देने के लिए आया हुआ रतलाम एवं सोनकच्छ का बोहरा समाज...

'तेरी मरजी पूरन हो...'

जोधपुर (राजस्थान) में अविस्मरणीय सत्संग समारोह में उपस्थित साधु-संतों एवं श्रद्धालुओं का मानव समुदाय... उस भव्य प्रसंग पर पूज्यश्री की अमृतवाणी का लाभ लेने के लिए आये हुए राजस्थान शासन के **भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह शेखावत** भावपूर्वक पूज्यश्री का अभिवादन कर रहे हैं ...

पुष्करराज (अजमेर) में महाशिवरात्रि शिविर में ध्यान साधना की गहराइयों में गोता लगवाते हुए पूज्य श्री गुरुदेव...

शिवरात्रि के पावन पर्व पर सुखलिया ग्राम इन्दौर में विडियो सत्संग केन्द्र के द्वितीय स्थापना दिन महोत्सव पर निकाली गई शोभायात्रा के दृश्य...

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91